समर्पित

यह पुस्तक समर्पित है
अमर शहीद **राजीव भाई दीक्षित** को
जिन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण
राष्ट्र के लिए अर्पित कर दिया।

उन सभी साथियों को जो
राजीव भाई दीक्षित के लगाये हुए स्वदेशी
पौधे को एक विशाल बरगद का पेड़ बनाने में लगे हुए हैं
और **राजीव भाई दीक्षित** के सपनों का भारत बनाने
का प्रयास कर रहें है।

स्वदेशी परिवार समूह

प्रकाशक -

श्री राजीव दीक्षित गोशाला संस्थान (पंजाब)

निरोगी काया समूह हिमाचल प्रदेश

स्वदेशी चिकित्सा शिविरों के लिए सम्पर्क करें :

पंजाब	हरियाणा	हिमाचल	दिल्ली	मुम्बई
09779678114	09050300498	09817248115	09818440942	09768181814

प्रथम संस्करण - नवम्बर 2016

सहयोग राशि : 60/- रूपये

भारतीय जीवन सुधारक कम्पनी

नजदीक राजमहल फार्म हाऊस, गोहाना रोड, जीन्द
Contact : 99918-66205, 99918-66206
E-mail: bhartiyamitti@gmail.com

आत्मा निर्भर गौशाला

गाय सम्पूर्ण सृष्टि में सबसे उपयोगी प्राणी है, इसलिए हमारे पूर्वजों ने इसे माता कहा है, लेकिन सबसे अधिक उपयोगी होने के बावजूद आज सबसे ज्यादा दयनीय स्थिति में है क्योंकि अधिकतर गोशालाओं में आर्थिक संकट बना हुआ है।

यदि हम गाय की उपयोगिता को समझ लें और इसके पंचगव्य से दैनिक उपयोगी व औषधि उत्पाद बनाने व प्रयोग करने का थोड़ा सा प्रयास करे तो दूध न देने वाली गायों के सहारे भी गोशालाओं की आर्थिक दशा सुधार सकते हैं व गोशालाएं स्वावलम्बी बन सकती है और गोशालाएं रोगजार का केन्द्र भी बन सकती है। इसे हम इस प्रकार भी समझ सकते है।

यदि आपके पास 5 गायं हो तो निम्नलिखि प्रकार से आप को आमदनी हो सकती है। जैसे :-

1. गोमूत्र :

गोमूत्र खाद के तौरपर पानी में मिलाना

गोमूत्र से कीटनियंत्रक बनाना

गोमूत्र से फिनाइल बनाना

गोमूत्र से केश निखार बनाना

गोमूत्र से औषध (जिस गौ शाला में वैद हो)

जिसके पास 50 लीटर गोमूत्र हररोज हो वह अग्रलिखि उत्पादों का निर्माण करके अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ बना सकता है जैसे:-

गौमूत्र	उत्पाद	अनुमानित आय
10ली.	5 ली. केशनिखार	1700 रु.
10ली.	10 ली. फिनाइल	500 रु.
20ली.	10 ली. कीटनियंत्रक	800 रु.
10ली.	5 ली. अर्क	1400 रु.
कुल 50 लीटर		4400 रु.

उत्पादन व बिक्री व्यवस्था हो तो हर रोज 4400 रु. आय हो सकती है।

गोमूत्र की मात्रा आधी हो तब भी 2000 रु. तक आय बन सकती है। ज्यादा गोमूत्र हो तो गौशाला की कृषि के लिये प्रयोग करे.

घरेलु उत्पाद बनाने और वितरण का सामान्य ख्याल

कुछ लोग जो उत्पाद बनाते है उन्हें रोजगार

कुछ लोग जो उत्पाद बेचेते है उन्हें रोजगार

उत्पाद बेचने हेतु : धार्मिक संस्था, सामजिक संस्था, विज्ञान संबधित रूची वाले संगठन और वृद्धो के संगठन से संपर्क कर वितरण व्यवस्था बना सकते है।

संस्थाओं को ज्यादा लाभ दे कर व्यापार बढ़ा सकते है।

प्रदर्शनी व मेला लगाकर पंचगव्य की सच्ची और वैज्ञानिक समझ लोगो तक पहुंचानी चाहिए।

सरकारी संस्थाओं के साथ किसान के लिये निदर्शन कार्यक्रम कर, कीटनियंत्रक और गोबर खाद का प्रयोग बढ़ाना चाहिए, सजीव कृषि को बढ़ाना चाहिए

2. गोबर :

गोबर से हवन समीधा बनाना

गोबर से खाद

गोबर से राख (बर्तन पाऊडर, दंतमंजन हेतु)

गोबर से धुपबत्ती

50 किलो गोबर हो तो पांचों चीज बनाने में प्रयोग करने से हररोज 2000 रु. की आय

3. साबुन (नहाने का साबुन)

सामग्री :

गोमय ताजा (Cow Dung)	1250 ग्राम
शुद्ध गेरू (geru)	200 ग्राम
मुलतानी मिट्टी (multani soil)	1 कि. ग्राम
कपूर (Kapur)	060 ग्राम
नीम पत्र (neem leaf)	200 ग्राम
पानी (Water)	10 लीटर
तिल तेल (sessame oil)	100 ग्राम
गोमय स्वरस (Cow Dung Juice)	200 ग्राम
शंख पाऊडर (Shell Power)	50 ग्राम/ आवश्यकता अनुसार

साबून पाऊडर निर्माण :

मुलतानी मिट्टी साफ करे, छोटे टुकड़े कर पल्वराइझर में डाल कर पाऊडर बनाकर कपड़े से छान लें, गेरू को भी पल्वराइझर में पाऊडर बनाकर कपड़ा से छान ले. अब मुलतानी मिट्टी, गेरू, गोमय को पानी डालकर अच्छी तरह से हाथ से मसल कर मिश्रण कर। इस मिश्रण की छोटी- 2 बट्टिया बनाकर धूप में सूखा दे. सूखने के बाद पल्वराइझर में पाऊडर बनाकर कपड़े से छानकर भरे लें.

गोमय स्वरस निर्माण :

200 ग्राम गोमय में 200 ग्राम पानी मिलाकर कपड़े से छान ले 200 ग्राम गोमय स्वरस प्राप्त होगा.

साबून तेल निर्माण :

लोहे की कढ़ाई में 100 ग्राम तिल तेल गरम करे, गर्म तेल में 200 ग्राम गोमय स्वरस डाले. धीमी आच से गरम करे, गोमय स्वरस जल जाए केवल तेल बचे (तड़ तड अवाज आना बंध हो)। जब तेल काले हरे रंग का हो तब तेल सिद्ध हुआ समझे

तेल परीक्षण करने हेतु रूई की बाती बनाकर तेल में भीगों कर सुलगाये बिना आवाज के जले तो समझो के तेल तैयार हुआ है।

गरम गरम तेल को सूती कपड़े से छन ले, उसमें कपूर मिला ले।

नीम काठे का निर्माण :

नीम पत्र पानी में डाल आधा रहे तब तक उबाले. बाद कपड़े से छान कर भर ले.

साबून निर्माण :

1 किलो साबून पाऊडर + साबून तेल 100 ग्राम में आवश्यकता अनुसार नीम का काठा मिला आटे की तरह गोन्द ले, उसे साबून की डाय में डाले और साबून तैयार करें, पहले 24 घंटे छाया में सुखाये, बाद में धूप में सुखाये, ऐसा 3-4 बार करे, 7-8 दिन बाद सुखा साबून शंख पाऊडर लगाकर पैकींग करे।

उपयोग : प्राचीन पद्धति से बना यह साबून वनसत्व युक्त, उत्साहवर्धक,कांतिवर्धक, तंदरूस्ती बढ़ाने वाला और कई प्रकार के चर्म रोगों का नास करने वाला है।

4. शेम्पु

सामग्री

गोमूत्र (cow urine)	10 लीटर
अरीठा (Aritha)(बिना बीज के)	1 कि. ग्राम
बावची बीज	100 ग्राम
शिकाकाई (turmeric power)	500 ग्राम
तुलसी पत्र (Basil Leaf)	100 ग्राम
चाय की भूकी (tea dust)	50 ग्राम
जटामांसी (Nard)	100 ग्राम

निर्माण : (पेकींग-100 मि.ली.)

अरीठा के बीज निकाल ले , शिकाकाई छोटे-छोटे टुकड़े कर लें, बाकी की औषधि साथ में गोमूत्र में बारह घंटे तक लोहे की कढ़ाई में रखे, दुसरे दिन उसे पकावे, आधा जल जाये तब तक गरम करे, बाद में उसे उतार कर छान ले, ठंडा होने पर पैक करें-

उपयोग : बाल झड़ना, बाल सफेद होना, रूसी जैसी समस्या से छुटकारा मिलता है

5. उबटन –100 ग्राम

सामग्री :

गोमय चूर्ण (cow dung dry)	15 ग्राम
शुद्ध गेरू (Sonageru)	15 ग्राम
मुलतानी मिट्टी (multani soil)	50 ग्राम
शतावरी चूर्ण (Satavari)	03 ग्राम
वचा चूर्ण (vcha)	08 ग्राम
कपूरकाचली चूर्ण (Kapurkanchali)	02 ग्राम
हल्दी चूर्ण (turmeric power)	02 ग्राम
हरड़ चूर्ण (Myrobalan Power)	05 ग्राम

उबटन पाऊडर निर्माण : (पेकींग –50 ग्राम)

मुलतानी मिट्टी साफ कर, छोटे-छोटे टुकड़े कर पल्वराइझर में पाऊडर बनावे, गेरू को पल्वराइझर में पाऊडर करे (कपड़े से छान ले), अब मुलतानी मिट्टी, गैरू, गोमय को पानी डालकर अच्छी तरह से मसल के मिश्रण करे, इस मिश्रण को धूप में सूखा कर बाद में पल्वराइझर में पाऊडर करे, कपड़े से छान ले, जिस में शतावरी चूर्ण, वचा चूर्ण, कपूर काचली चूर्ण, हल्दी चूर्ण को मिश्रित करे, फिर से कपड़े से छान ले, यह उबटन तैयार हुआ।

उपयोग : त्वचा चमकदार बनाने, तंदरूस्त, कांतिवर्धक बनाने में उपयोगी है। यह उबटन वेदकालीन प्रचलित पद्धति से बनाता है।

6. दंतमंजन

सामग्री :

गोमय भस्म अर्धजली	750 ग्राम
कपूर, भीम सैनी (kapur)	025 ग्राम
लोंग पाऊडर	025 ग्राम
कालीमिर्च पाऊडर	025 ग्राम
सेंधा नमक (Sendha Solt)	125 ग्राम
शुद्ध फीटकरी (alumen)	050 ग्राम

गो घी 102 फिटकारी शुद्धि हेतू)

निमार्ण : (पेर्कींग – 30 ग्राम)

मंजन पाऊडर के लिये जमीन में 4'X4'X4' फुट का गढ़ा तैयार करें, उसे इटों से बना ले, इस गड्डे में बहार से जलाये हुए 5-6 कंडे डाले, उपर से दुसरे कंडे तरीके से रखे, ज्यादा कंडे जलने लगे उसके बाद हवा न जावे ऐसा बंध कर दें, (संधी बंधन)। एक दिन बाद निकाले, जो काले कोयले जैसे हो, उसे पाऊडर कर छान ले, एक बर्तन में काला कोयले का पाऊडर, औषाध पाऊडर, सेंधा नमक, मिश्र करें और कपड़े से छान ले। तैयार मंजन का उपयोग आठ दिन बाद करें।

उपयोग :

दंत रोगों में हितकर, मसुडे फुलना, मुखकी दुर्गंध से मुक्ति में लाभकारी और दांतो को चमकदार बनाने वाला होता है।

पेज 14 का शेष...

10. गो मूत्र फिनाइल

सामग्री :

गोमूत्र (Cow Urine)	1 लीटर
नीम पत्र (neem leaf)	200 ग्राम
पाइन तेल (इमलसीफायर युक्त)	50 ग्राम
उबाला हुआ पानी	800 मिली

नीम पत्र - गोमूत्र क्वाथ (कपेजपसमजमक दममउ . बवूनतपदम ूजमत) 200 मिली

निर्माण विधि : (पेकींग -500 मि.ली. , 1 ली.)

नीम पत्र गोमूत्र में डाल उबाल कर चौथाई भाग रहने पर छान ले, बाद में पाइन ऑयल और गोमूत्र, उबाला डाल कर बराबर मिलाए , बाद उसमें पानी धीरे-धीरे डाल हिलाते रहे, सब मिलावट के बाद भी थोड़ी देर तक हिलाते रहे, जिससे अच्छा फिनाइल तैयार होगा,हिलाने के लिये हमेशा नीम लकड़ी का प्रयोग करें, बर्तन हमेशा कांच, चीनी मिटी या प्लास्टीक का रखे.

उपयोग :

कीटनाशक, जंतुनाशक, सफाई उपयोगी

11. कामधेनु केश तेल

सामग्री :

तील तेल (Sesame Oil)	1800 ग्राम
नारीयल तेल (Coconut Oil)	200 ग्राम
रतन ज्योत (jetrofa)	25 ग्राम
जटामांसी (Nard)	25 ग्राम
कपूरकाचली (Kapurkanchali)	25 ग्राम
भांगरा (Alba)	25 ग्राम
त्रिपफला (trifala)	25 ग्राम
गायका दूध (Cow Milk)	2 लीटर
नींबू (lemon)	6 नंग
पानी (Water)	6 लीटर
सुगंधी (flaver)	20 मीली

निर्माणविधि : (पेकींग - 100 मी.ली.)

सर्वप्रथम तील तेल और नारीयेल के तेल में 6 नग नींबु काटकर डाले, धीमी आंच पे पकायें बाद में भांगरा त्रिफला, रतनज्योत को आधा अधुरा मसल कर चटणी जेसां बनाले, उसमें गायका दूध, पानी का मिश्रण डाल धीमी आंच पर गरम करे, जब चटचट आवाज आना बंध हो और झाग आने बंद हो तब तेल तैयार हुआ समझे, वर्ती परिक्षण (रूई की वाती को तेल में भीगो कर जलाने से आवाज बीना जलनी चाहिए) तैयार तेल में कपूर काचली और जटामांसीकी पोटलीओ को आठ दिवस तक डुबाके रखें, 9 वें दिन तेल छानकर पैक करे.

उपयोग : बालो के सभी रोग पर प्रभावी है।

12. बर्तन धोने का पावडर

सामग्री :

डोलोमाइट पथ्थर पावडर	8 किलो
गोमय भस्म (Cow Dung Power)	2 किलो
धोने का सोडा (वकं)	1 किलो
एस एल ई एस (sles)	25 ग्राम
नींबु की सुगंध	10 ग्राम

निर्माण विधि : (पेकींग -500 ग्राम, 1 किलो)

प्रथम सोडा और एस.एल.ई.एस. को मिश्र कर दे, बाद गोमय भस्म और डोलोमाइट पत्थर पावडर डाले, उसमें नींबु की सुंगधी डाल बराबर मिश्र करे, बाद पैक करें

उपयोग : जंतुमुक्त और चमकीले बर्तनों के लिए अति उतम होता है।

7. चंदन धूप :

सामग्री :

गोमय चूर्ण (cow dung)	700 ग्राम
कोयला (Cole)	125 ग्राम
नागरमोथ (nagarmotha)	125 ग्राम
लालचंदन पाउडर (Red Sandal)	125 ग्राम
जटामांसी (nard)	125 ग्राम
कपूर काचली (Kpurkancli)	100 ग्राम
गूड की चासनी	250 ग्राम
गाय का घी (cow ghee)	200 ग्राम
चावल का उबाला	200 ग्राम
चंदन या केवडा तेल (Sandal Oil)	20 मि. ली.

निर्माण विधि : (पेकींग -10 नग)

कोयला,नागरमोथा, लालचंदन, कपूर काचली आदि को बारीक पीस कर छान लें और गूड चासनी के साथ अच्छी तरह हाथ से मसल के तैयार कर, उसके बाद गोमय चूर्ण मिला फिर से अच्छी तरह मसल कर तैयार करं सुगंधित तेल डाले, बाद उसकी धूप बत्ती तैयार करे, धूपबत्ती को छाया में सुखाए, तैयार होने पर मजबूत पैकिंग पेक करें,

उपयोग : हवा शुद्धि, प्रदूषण रोधक, रोगाणू नाशक, मच्छर रोधक, स्वास्थ्य रक्षणार्थ यह धूप धार्मिक विधिओं में भी उपयोगी है।

8. सादा चंदन धूप :

सामग्री :

गोमय चूर्ण (cow dung)	1 किलो
लकड़ी का बुरादा (Wood Dust)	200 ग्राम
गायका घी (cow ghee)	200 ग्राम
गुड की चासनी	200 ग्राम
चावल का उबाला	200 ग्राम
चंदन तेल (Sandal Oil)	020 मि. ली.
अथवा	
केवड़ा तेल	020 मि. ली.

निर्माण विधि : (पेकींग -10 नंग)

लकड़ी के बुरादे को छान ले, बाद में गोमय, चावल उबाला, गुड चासनी, व घी मिला कर अच्छी तरह मसल कर तैयार करें सुंगधित तेल डाले, बाद धूपबत्ती को तैयार करें। तैयार होने पर मजबूत पेर्कीग में पैक करे,

उपयोग :

हवा शुद्धि, प्रदूषण रोधक, रोगाणू नाशक, मच्छर रोधक, स्वास्थ्य रक्षणार्थ यह धुप धार्मिक विधिओं में भी उपयोगी है।

9. लाल दंतमंजन

सामग्री :

गोमय भस्म (पूर्ण जली)	1.किलो
त्रिफला चूर्ण (trifala power)	025 ग्राम
कालीमिर्च चूर्ण	250 ग्राम
लौंग चूर्ण	75 ग्राम
बबुल छाल चूर्ण (Acacia Bark)	100 ग्राम
मोलसली छाल चूर्ण (molsri bark)	050 ग्राम
समुद्र लवण (Sea Solt)	250 ग्राम
शुद्ध सोनागेरू (Sonageu)	250 ग्राम

(गो घी 25 ग्राम गैरू शुद्धि हेतु)

निर्माण विधि : (पेकींग -30 ग्राम)

गेरू को गाय के घी से शुद्ध करे-बाकी के सब वानस्पतिक चूर्णोको मिश्र करे, कपड़े से छान ले, बाद में पेक करे,

उपयोग : दंत रोगों में हितकर, मसुडे फुलना, मुखकी दुर्गध से छुटकारा और मुह के छाले के रोग में भी लाभ देता है।

गोमय दंतमंजन कैसे बनावें ?

आज कल टूथपेस्ट और टूथब्रश से दाँत साफ करने का प्रचलन हैं। टूथपेस्ट और टूथब्रश का उपयोग करने वाला हर तीसरा व्यक्ति दाँत का मरीज हैं। क्योंकि टूथपेस्ट में झाग के लिए एस. एल.एस. जैसे रासायनिकों का प्रयोग किया जाता हैं। अधिकांश टूथपेस्टो में गौमाता से लेकर सुअर जैसे जानवरो की हड्डियों का चूरा काम में लिया जाता हैं। जो गौभक्तो और अन्य लोगो के आंदोलन के कारण बीच-बीच में बंद कर दिया जाता हैं। स्वाद के लालच में छोटे बच्चे प्राय: इसे निगल जाते हैं, जो आगे चलकर बहुत हानिकारक सिद्ध होता हैं। ब्रश से मंजन करने पर मसूढ़ो को बहुत नुकसान होता है, इसीलिए कम्पनियां रोज ब्रश का आकार- प्रकार बदल कर लुभाने की कोशिश करती हैं।

गौदंतमंजन की वैज्ञानिकता :- गोबर का कोयला दुर्गन्धनाशक होता हैं, इसके प्रयोग से दाँतों में दुर्गन्ध से मुक्ति मिलती हैं। सभी प्रकार के फिल्टरों की गंदगी कोयले से साफ होती हैं, दांत की सफाई में कोयला अतिउत्तम। उंगली से मंजन करने से मसूढ़ो की मालिश होती है इसलिए मसूढे मजबूत तो दाँत मजबूत। यह मंजन हजारों वर्षो से परखा हुआ हैं।

लाभ :- दाँतों को कीड़ा लगना, दाँतों में पानी लगना या गरम वस्तु लगना, मसुड़े फूलना, मुँह में दर्द, जीभ के छाले, गले में खरास, टॉसिल, मुँह की दुर्गन्ध, पायरिया, मसुड़ों में मवाद आदि में पूर्ण लाभकारी हैं। सुबह व सोते समय मंजन करना आवश्यक हैं। दंतरक्षा व मुख रोग से रक्षा होगी।

बनाने की सामग्री :- गाय के गोबर के कंडे का कोयला (बारीक चूर्ण)- 1 किलो, सादा कपूर (पिपड़ी का)-20 ग्राम, अजवाईन का सत-20 ग्राम, लौंग चूर्ण-10 ग्राम, नीलगिरी का तेल-20 ग्राम, सादा नमक (पाउड्र)-160 ग्राम, सादा पानी-160 ग्राम मि. लीटर (नमक के बराबर)।

बनाने की विधि :- गोबर के कंडो को साफ सुथरी जगह में रखकर जला देवें। धुआँ निकलना बंद हो जाए तब किसी साफ बर्तन से ढ़क दें। लगभग आधा घंटे के बाद खोलकर काला, मजबूत कोयला निकाल लेवे। इस कोयले को खरलमें बारीक पीसकर, सूती बारीक कपड़े से रगड़कर छानकर बहुत बारीक पाउडर बना लेवे। इससे पूर्व कपूर और अजवाईन के सत को एक बोतल में मिलाकर रखें। यह अपने आप घुलकर 40 मि.ली. कपूर का तेल बन जायेगा। कुछ कमी रहे तो खूब हिलाकर ठीक कर लें। इसे कण्डे के बने हुए पाउडर में डाल देवें। इसमें लौंग का चुर्ण और नीलगिरी का तेल मिला दें। उक्त मात्रानुसार सादे नमक को 160 मि.ली.उ पानी में मिलाकर पूरा नमक घोल देवें। अब तीनों चीजों (कंडे का कोयला, कपूर तेल तथा नमक के घोल) को किसी साफ बर्तन अथवा कड़ाई में मिलाकर अपने हाथों से मिलाकर आधा घंटा तक खरल में रगड़े। इसे साफ शीशीयों में भर लेवें और प्रतिदिन प्रयोग में लेवें।

मैने 24 वर्ष तक मात्र गौदुग्ध का सेवन करते हुए माँ गायत्री की साधना की जिसके फलस्वरूप लगभग 3000 ग्रंथों का सृजन, समाजसेवा एंव आध्यात्म कार्य मेरे से हो सका। यह गौमाता के दूध का ही परिणाम है।

– प.श्रीराम शर्मा आचार्य, गायत्री परिवार

जीव-अमृत क्या है?

बार-बार प्रयोग करने के पश्चात् परिणाम निकला कि एक एकड़ ज़मीन के लिए दस किलो गोबर के साथ गौ-मूत्र, गुड़ और दो-दले बीजों का आटा (बेसण आदि) मिला कर प्रयोग में लाकर परिणाम चमत्कारी निकलते हैं। आखिर एक फार्मूला तैयार किया गया जिसका नाम रखा गया- 'जीव-अमृत'। जीव-अमृत तैयार करने के लिए सारी उन्हीं विधियों का ही प्रयोग किया गया जो जंगल में लगे उस फलदार वृक्ष के नीचे कुदरत प्रयोग करती है। जीव-अमृत बनाने के लिए देसी गाय का गोबर तथा मूत्र चाहिए। विदेशी जरसी गाय वास्तव में गाय है ही नहीं। यह कोई दूसरा ही प्राणी है, क्योंकि इसमें गाय वाला एक भी गुण नहीं है। मेरे प्रयोग में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य सामने आए। पहला यह कि यदि देसी गाय का गोबर तथा मूत्र ज़रूरत अनुसार उपलब्ध हो तो वह सब से उत्तम है। यदि यह ज़रूरत अनुसार उपलब्ध न हो तो आधा देसी गाय का तथा आधा देसी बैल या भैंस का गोबर भी लिया जा सकता है परन्तु अकेला देसी बैल तथा भैंस का नहीं। दूसरा तथ्य यह सामने आया कि जो देसी गाए ज़्यादा दूध देती है उसका

की सीमा में नाली बना कर 2-5 लीटर प्रति पौधा देना है। जीव-अमृत डालने के समय भूमि में नमी का होना बहुत ज़रूरी है। यदि आपके पास बैरल, ड्रम या सीमेंट की टैंकी नहीं है तो खरीदने की ज़रूरत नहीं है। जिस जगह से खेत को पानी जा रहा है उस जगह के साथ ही 500 लीटर क्षमता वाला एक गड्ढा खोद लो। उसकी मिट्टी बाहर निकाल कर उस गड्ढे को भीतर से ईंटों या पत्थरों की अच्छी तरह तह बनाने के बाद मिट्टी और गोबर के साथ अच्छी तरह लेप लो। सूखने के बाद यह गड्ढा जीव-अमृत बनाने के लिए तैयार है। यदि मिट्टी भारी है तो भीतर एक पलास्टिक सीट बिछाई जा सकती है। उसके किनारों पर ईंटें या पत्थर रखे जा सकते हैं। एक मज़दूर या फिर घर की औरत इसके किनारे बैठ कर धीरे-धीरे बहते पानी में जीव-अमृत डालती जाएगी।

गोबर खाद कितनी?

मैं देखता हूँ कि कई किसान पिछले कई सालों से दूसरे किसानों से या फिर शहरों से ट्रालियां खरीद कर प्रति एकड़ 15-50 बैल-गाड़ियां खाद की डालते आ रहे हैं। ऐसा केवल बड़े किसान ही कर सकते हैं। छोटा किसान गोबर खाद नहीं खरीद सकता। उसकी आर्थिक स्थिति उसे आज्ञा नहीं देती। किसानों के दिमाग में यह बात घर कर चुकी है कि यदि कुदरती खेती करनी है तो गोबर खाद ज़्यादा मात्रा में ही डालनी पड़ेगी। इसका परिणाम बिल्कुल उल्टा हुआ है। जो छोटे और मध्य वर्गीय किसान हैं, जो हर साल गोबर खाद नहीं खरीद सकते उन्होंने ज़्यादा से ज़्यादा मात्रा में रासायनिक खादें डालनी शुरू कर दीं। इस कारण भूमि बँजर बनती गई तथा पैदावार हर साल कम होने लगी। यह किसान आर्थिक संकट और कर्जे की जंजीरों में जकड़ा गया। उसके पास आत्म-हत्या के अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता बचा ही नहीं। वह या तो आत्म-हत्या करे या फिर खेती वाली भूमि बेच कर शहर में जाकर मजदूरी करे। यदि काम न मिले तो गुण्डागर्दी तथा अपराध करने का रास्ता चुने। ~~मैंने किसानों की ऐसी स्थितियों को बदलने के~~

प्राकृतिक खेती चार पहियों पर खड़ी है

1. बीज – अमृत
2. जीव – अमृत
3. अछादना अर्थात ढाँपना
4. वाफ्सा अर्थात वत्र

यदि कार का एक पहिया निकल जाए तो कार खड़ी हो जाती है चलती नहीं। इसी तरह प्राकृतिक खेती करने के लिए ऊपरलिखित चारों बातें करना ज़रूरी हैं।

बीज – अमृत कैसे बनाएँ?

बीजाई करने से पहले बीजों का सर्फा अर्थात संशोधन करना बहुत ज़रूरी है। इसके लिए बीज – अमृत बहुत ही उत्तम है। जीव – अमृत की भान्ति बीज – अमृत में भी मैंने वही चीजें डाली हैं जो हमारे पास बिना किसी कीमत मौजूद हैं। बीज – अमृत निम्नलिखित सामग्री से

ढाँपने के तीन ढंग हो सकते हैं

1. मिट्टी से ढांपना (Soil Mulching)
2. सूखे पत्तों, पराली आदि से ढाँपना (Straw Mulching)
3. जीवित फसलों आदि से ढाँपना (Live Mulching)

जब हम हल या किसी और साधन से भूमि पर कार्य करते हैं तो भूमि के ऊपर ढक्कन सा डाल देते हैं। इससे भूमि के अन्दर की नमी तथा तापमान ठीक अनुपात से बना रहता है। इससे जीव – जन्तु अपना कार्य ठीक ढंग से करते रहते हैं। यह पहली किस्म का ढक्कन है। जब हम फसल की कटाई के बाद बचे – खुचे पौधों से धरती के लिए ढक्कन बना दें तो अनगिणत जीव – जन्तु तथा कैंचुए 24 घन्टे काम करते रहते हैं तथा इस प्रकार हमारी आने वाली फसल के लिए खुराकी तत्व पूरा कर देते हैं जो आने वाली फसल के बढ़ने – फूलने के लिए सहायक होते हैं।

इसलिए हम ज्वार, बाजरा, गेहूँ, जीरी, सोयाबीन, मूँगी, माँह आदि फसलों के बचे घास – काटे, गन्ने के आग, घास और कपास, नर्मे का बचा – खुचा जो कुछ भी खेत में मिले उसको ढक्कन बनाने के लिए प्रयोग में लाएँ। यह दूसरी किस्म का ढक्कन है।

तीसरी किस्म का ढक्कन

यह हम सजीव फसल का बनाते हैं। हम गन्ना, अंगूर, इमली, अनार, केला, नारियल, सुपारी, चीकू, आम और काजू आदि फसलों में जो सहजीवि अंतर – फसलें या मिश्रण फसलें लेते हैं उन्हें सजीवी ढक्कन कहते हैं। ये अंतर – फसलें हमारी मुख्य फसलों का कुछ भी नहीं घटाती हैं, उल्टा उनको बढ़ाती हैं।

बीज – अमृत से बीजों को साफ करने के बाद फसलें बीजने के उपरान्त तथा फसलों को और फलदार पौधों को जीव – अमृत देने से ही भूमि उपजाऊ बनती है, सजीव बनती है, माँ बनती है। ऐसा परिणाम पूर्ण रूप से तभी मिलता है जब हम धरती माता को साड़ी से पूरी तरह

प्रयोग में लाने का ढंग: ड्रम में पड़े पानी अर्थात जबरैलिक घोल को उपलों से अलग कर लो और दो लीटर से फसल के ऊपर उस समय छिड़काव करो जब फसल सारी बल्लियां या मुंजरें निकाल चुकी हो। फल वाले पौधों पर उस समय छिड़काव करो जब फल बनने शुरू हों। इस से पौधों के दानों और फलदार पौधों पर निखार आता है और फसल में बढ़ौतरी होती है।

जबरैलिक घोल की बाज़ारी कीमत 20,000 से 30,000 रूपये प्रति लीटर है। ऊपरलिखित बताए ढंग से इसके प्रयोग करने से फसल की पैदावार में 15 प्रतिशत से 20 प्रतिशत की बढ़ौतरी होती है तथा दाने बहुत मीठे, चमकदार तथा वजनदार होते हैं।

फुंगीसटीड बनाने की विधि – फफूँदी नामक उल्लीनाशक

100 लीटर पानी में 3 लीटर खट्टी लस्सी मिला कर फसल पर छिड़काव करो। यह छिड़काव आप बरनील की हर कटाई के बाद कर सकते हो क्योंकि बरनील की जड़ों में उल्ली ज़्यादा बनती है जो पशुओं के लिए बड़ी हानिकारक है।

नोट:

1. उपरोक्त सभी फसलों के लिए कोई रसायनिक खाद या कीड़े मार दवाइयों का प्रयोग नहीं होता, केवल श्री सुभाष पालेकर के बताए फार्मूलों का प्रयोग होता है।
2. पशुओं का चारा भी इसी विधि अनुसार तैयार होता है।
3. कीड़े तथा हमारे मित्र कैंचुए या दूसरे कीड़े 100% में से 85% हमारे मित्र हैं। हमने 15% दुश्मन कीड़े मारने के लिए 85% मित्र कीड़े भी मार दिए हैं। अब हम पक्षियों के बारे में सोच रहे हैं कि वे कहाँ गए? इसी प्रकार आने वाला समय बताएगा कि मानव जाति के बहुमुल्य हीरे कहां गए जिनसे हमें आशाएँ थीं। क्या हम लोगों का शारीरिक पतन करने वाले मार्ग पर नहीं चल रहे हैं? कुदरती खेती अपनाएँ और डा. इन्द्रजीत कौर जी से मार्ग-दर्शन प्राप्त करके भगत पूरन सिंह जी का आशीर्वाद प्राप्त करें जिन्होंने

पड़ सके। इस से सूर्य ऊर्जा, पानी, हवा तथा नर्म मिट्टी पौधे को मिलती रहती है। क्यारियों में मलचिंग (घास-फूस, पराली, गली-सड़ी बनस्पति मटर, टमाटर आदि) आसानी से हो सकती है। इससे पानी की बचत होती है और गोड़ाई आसानी से होती है क्योंकि पौधे को केवल नमी की ज़रूरत होती है। चौड़ी पेड़ा इसके लिए बहुत सहायक होती हैं और ज़्यादा पानी देने के कारण धरती कठोर नहीं होती।

जीव-अमृत (फर्टिलाइज़र खाद) बनाने की विधि

1.	देसी गाय का गोबर	10 किलो
2.	देसी गाय का मूत्र	5-10 लीटर
3.	गुड़	1-2 किलो
4.	वेसन या दोफाड़ हुई दालें	1-2 किलो
5.	मेड़ की मिट्टी	एक मुट्ठी
6.	पानी	200 लीटर

इन चीजों को पानी में घोल कर 48 घन्टे तक रखो। दिन में दो बार लकड़ी के साथ इन्हें हिलाना है ताकि आक्सीजन इसमें मिल सके। इस घोल को पानी द्वारा खेतों में डालें। फसलों के ऊपर 15-25-35 दिनों के अंतर से छिड़काव कर सकते हो। इसको बीजों के ऊपर डाल कर उनका संशोधन भी कर सकते हो। बीजों को छाया में ही सुखाना है। संशोधन किए हुए ये बीज जल्दी और ज़्यादा मात्रा में उगते हैं और इन्हें भूमि में लगने वाली बीमारियाँ नहीं लगतीं।

अग्नि-अस्त्र बनाने की विधि

अग्नि-अस्त्र कीड़े, फलियों, फलों तथा कपास के टींडियों में रहने वाली सारी बड़ी सूंडियों की रोकथाम के लिए बढ़िया कीट-नाशक है। इसे बनाने की विधि इस प्रकार है:-

गाय के 10 लीटर मूत्र में 2-3 किलो तीखी हरी मिर्च, 1 किलो लहसुन और 5 किलो कड़वी नीम, धतुरा या अक्क के पत्ते कूट कर डाल दें फिर लकड़ी से इसे घोलो और बर्तन को ढांप कर इसे उबालो।

"सिंग खाद प्रकार"-1 - आवश्यक सामग्री - मृत गाय के सींग की खोल व स्वस्थ दुधारू गाय का गोबर । **समय-** शरद् पूर्णिमा से चैत्र पूर्णिमा तक **विधि-** शरद् पूर्णिमा के दिन दूध देने वाली गाय का गोबर मृत गाय के खाली सींग में भरकर 1½ फुट- 18 इंच गहरा गड्ढा खोद कर मोटा सिरा नीचे रखते हुए जमीन में गाड़ दे, नुकीला सिरा दो इंच हवा में खुला रखें, पके हुये गोबर खाद व मिट्टी से गढ्ढा भर दें नमी बनायें रखें, चैत्र पूर्णिमा को खोद कर निकाल लें, ऐसे कई सींग एक साथ गाड़ सकते हैं ।

भण्डारण - इस खाद को किसी मिट्टी के घड़े में ठंड़ी जगह में रखें, नमी बनाये रखें ।

उपयोग विधि- 13 लीटर पानी में 30 ग्राम सींग खाद मिलाकर सीधा व उलटा भंवर बनायें तथा पुरानी खजूर की झाड़ूँ, नीम के पत्तों से झाड़ूँ बनाकर एक एकड़ में बोनी की पूर्व संध्या पर छिड़के, दूसरी बार चार पत्ते होने पर छिड़के ।

लाभ- इससे जड़े गहरी जायेंगी, भूमि की नमी बनी रहेगी, जमीन भुर भुरी होगी, इससे ह्यूमस, सूक्ष्म जीवाणु, केंचुओं की वृद्धि होगी ।

"सींग खाद प्रकार"-2 (सिलिका खाद)- आवश्यक सामग्री- चकमक पत्थर का बहुत महीन चूर्ण, मृत गाय के सींग की खोल ।

समय- चैत्र पूर्णिमा से आश्विन (कुंवार) की नवरात्रि तक ।

विधि- सिलिका चूर्ण को रोटी के आटे की तरह गूंदकर सींग के खोल में भरकर रखें कुछ समय बाद अतिरिक्त पानी ऊपर आजायेगा उसे निकाल दें खाली जगह में और सिलिका चूर्ण भर दें । फिर जमीन में पहले प्रयोग की भांति गाड़ दें । फिर पका हुआ गोबर खाद व मिट्टी से गड्ढा भर दें । आश्विन नवरात्रा में निकालें ।

भण्डारण- इस खाद को किसी मिट्टी के घड़े में ठंडी जगह में रखें, नमी बनाये रखें ।

उपयोग विधि- 13 लीटर पानी में 1 ग्राम सिलिका का चूर्ण मिलाकर एक घण्टे सीधा तथा उल्टा भंवर बनायें । चार पत्ते की फसल पर नोजल का मुँह उपर कर महीन फुंआर के रूप में सूर्योदय के समय उड़ाये, दूसरी बार छिड़काव फलों के विकास के समय करें ।

लाभ- प्रकाश संश्लेषण में वृद्धि से पौधा स्वस्थ एवं मजबूत, फफूंद, कीट, व्याधियों से लड़ने की क्षमता में वृद्धि होगी ।

गौ - आधारित कृषि

कीट नियंत्रक -

(1) **गोमूत्र -** बहुत अच्छा कीट नियंत्रक है । गो मूत्र, गाय, बैल, नन्दी किसी का भी हो सकता है, कितना भी पुराना हो उपयोगी है । 1 लीटर गो मूत्र में 10 लीटर पानी मिलाकर छिड़काव करना चाहिए, कीड़ा लगने की सम्भावना से पहले ही छिड़काव करें । हर 15 दिनों में एक बार करें लाभकारी रहेगा ।

(2) **तक्र-छाछ-मट्ठा-** 10 से 40 दिन पुराना किसी बर्तन में मुँह बाँधकर रखदें बाद में 10 गुना पानी मिलाकर छिड़काव करें उपयोगी रहेगा ।

(3) **दूध -** एक लीटर देशी गाय के दूध में 16 लीटर पानी मिलाकर मिर्च की फसल पर छिड़काव करने पर कीड़े नहीं लगते ।

(4) **नीम की निम्बोली-बीज-** एक किलोकूटकर 20 किलो पानी में अच्छी तरह उबालें-ठंडाकर छानकर बाद में पौधों पर छिड़काव करें, विशेष कर सब्जी वाले पौधों पर इससे पौधों के पत्ते, फल कड़वे हो जायेंगे कीड़ा खा नहीं सकेगा, नीचे गिर जायेगा उस समय बारीक अनाज खेत मे बखेर दें, चिड़िया उस अनाज को खाने आयेगी कीड़ों को भी ले जायेंगी नीम की निम्बोली न मिलने पर पत्ते पीस कर उसका भी उपयोग कर सकते हैं ।

प्रभावी कीट नियंत्रक - 2 किलो आक के पत्तें, 2 किलो नीम के पत्ते, 1 किलो धतूरे के पत्ते, 1 किलो करंज या सीता फल के पत्ते, आधा किलो लहसुन छिलके सहित, 100 ग्राम नीला थोथा-मैलतूतू (कोपर सल्फेट $CuSO_4$) 100 ग्राम लाल मिर्च डंठल सहित, 5 ग्राम शुद्ध हींग इन सबको कूटकर 20 किलो पानी में उबालें दस किलो रहने पर ठंडा कर छानकर 10 किलो गोमूत्र किसी भी गोधन का हो, चाहे नाली से इकठ्ठा किया हो मिलादें, फिर उसे प्लास्टिक के ड्रम में भरकर मुँह बन्द कर गोबर के ढ़ेर में 15 दिन तक दबादें फिर निकालकर एक एक लीटर के पात्र में भर दें ।

जिनके बायें भाग में बायीं ओर घूमने वाला चक्र हो और दाहिने भाग में दक्षिणावृत्त तथा शरीर पर हरिण की सी धारियाँ हो, नेत्र और शरीर स्थूल हो और खुर फैले हुए न हो वे सभी बैल प्रशस्त एवं भार ढ़ोने में समर्थ होते हैं। जिसके थूथन में बल पड़े हो, दक्षिण भाग सफेद रंग बाकी शरीर, कमल, कुमुद अथवा लाख के रंग का हो, जिसकी पूँछ सुन्दर और चाल घोड़े के समान तेज हो, जिसके अण्डकोष लम्बे, पेट मेढ़े के समान और कमर तथा छाती पतली हो, उस बैल को भार ढ़ोने तथा लम्बी यात्रा करने में समर्थ और वेग में घोड़े समान जानना चाहिए। जिसका रंग सफेद, आँखे पीली अथवा लाल, सींग ताम्बे के रंग के और मुख बड़ा हो, वह **'हंस' जाति** का बैल शुभदायक एवं अपने झुण्ड को बढ़ाने वाला कहा जाता है।

जिसकी पूँछ जमीन तक लटकी हुई हो, जिसकी कमर तांबे के रंग की हो और नेत्र लाल हो, जिसका डील ऊँचा हो और रंग चित्र कबरा हो ऐसा बैल अपने स्वामी को शीघ्र ही लक्ष्मीवान बना देता है अथवा जिसका एक पैर सफेद हो और बाकी शरीर चाहे जिस रंग का हो वह बैल भी शुभ फल दायक होता है।

गो ऊर्जा :-

- बैल चालित कृषि यंत्र
- बैल चालित कृषि पम्प
- गोबर गैस से बिजली
- गोबर गैस से- मिथेन कार्बन-डाई-आक्साइड (CO_2) अलग कर वाहन चलाना
- गोबर गैस से छोटे जनरेटर

पंचगव्य उत्पाद

दवा हेतु गोमूत्र अर्क, घनवटी, पंचगव्य घृत, हरड़ेचूर्ण, मंजन, शैम्पो,फेसपैक, केश निखार साबुन, फिनाइल, मच्छर भगाने का तेल, बर्तन निखार आदि।

1. केश निखार चूर्ण :-

100 ग्राम आंवला चूर्ण

100 ग्राम शिकाकाई चूर्ण

100 ग्राम रीठा चूर्ण (गुठली निकालकर)

100 ग्राम मुलतानी मिट्टी

100 ग्राम गोमय चूर्ण

100 ग्राम नीम तेल

50 ग्राम मेहन्दी पत्ता चूर्ण

50 ग्राम चाय पत्ती या कॉफी

10 ग्राम कपूर

इन सबको पीसकर 10-10 ग्राम के पाउच (थैली) बनाना-फिर कच्चे दूध या छाछ या पानी में मिलाकर घोल बनाकर माथे में लगाना आधा घंटा रखना, फिर स्नान कर लेना। सप्ताह में दो या तीन बार लगाना - रासायनिक साबुन का प्रयोग बिल्कुल नहीं करना।

लाभ- इसको लगाने से मस्तिष्क ठंडा रहेगा। रूसी दूर होगी, बाल झड़ने बन्द होंगे, बाल काले रहेंगे। नये बाल आ सकते हैं। बाल कृत्रिम काले करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

2. मच्छर भगाने का तेल -

500 ग्राम गोमूत्र अर्क

100 ग्राम पाईन (चीढ़) का तेल

100 ग्राम सरसों का तेल

100 ग्राम नीम का तेल

100 ग्राम रतन जोत का तेल

100 ग्राम नील गिरि (सफेदा) का तेल

10 ग्राम कपूर

पहले 500 ग्राम गो मूत्र अर्क में पाईन तेल अच्छी तरह मिलादें फिर बाकी तेल धीरे-धीरे मिला दें बाद में कपूर मिला दें।

उपयोग- इसको ओडो मास की तरह शरीर में लगाया जा सकता हैं या Allout में भरकर उपयोग किया जा सकता है। मच्छर परेशान नहीं करेंगे, स्वास्थ्य के लिए लाभकारी रहेगा।

3. फिनाइल -

1 लीटर गो मूत्र अर्क

200 ग्राम पाईन तेल

2 लीटर नीम के पत्तों का उबाला पानी

विधि- पहले 1 लीटर गोमूत्र अर्क में पाईन तेल मिलाते जाये हिलाते जाये वह गाढ़ा सफेद तरल द्रव बन जायेगा। फिर उसमें धीरे-धीरे नीम का पानी मिलाते जाये, हिलाते जाय जब वह एक रस हो जाय तब ½-½ लीटर की बोतलों में भरकर बन्द कर दें। बहुत अच्छा <u>**फिनाइल**</u> बन गया।

हरेक फलदार वृक्षों के ऊपर जीव-अमृत का छिड़काव

फलदार वृक्षों की कोई भी आयु हो उनके ऊपर महीने में एक बार ऊपर लिखित विधि अनुसार जीव-अमृत का छिड़काव करो। 20-30 लीटर जीव-अमृत को 200 लीटर पानी में डाल कर। फल पकने के दो महीने पहले फलदार पेड़-पौधों के ऊपर 2 लीटर नारियल पानी 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना है। उसके 15 दिनों के पश्चात् 6 लीटर खट्टी लस्सी 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना है।

जीव-अमृत कैसे एक कल्चर (जामन/जाग) है?

अब आप सोचने लगे होंगे कि यह जीव-अमृत इतना ही चमत्कारी परिणाम देने वाला है तो क्या यह जीव-अमृत फसलों की जड़ों की खाद है? मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि जीव-अमृत किसी भी फसल या पेड़-पौधे की खाद नहीं है। यह अनगिनत सूक्ष्म जीवों का महासागर है। ये सारे सूक्ष्म जीव भूमि में, जो खुराकी तत्व प्रयोग में लाने योग्य नहीं होते, उनको प्रयोग में लाने योग्य बना देते हैं। दूसरे शब्दों में ये सभी सूक्ष्म जीव खाना बनाने का काम करते हैं। इस लिए हम इन्हें **'पेड़-पौधों के रसोइए'** भी कह सकते हैं। देसी गाय के एक ग्राम गोबर में 300 से लेकर 500 करोड़ जीवाणु होते हैं। जब हम जीव-अमृत बनाते समय 200 लीटर पानी में 10 किलो गोबर मिलाते हैं तो 30 लाख करोड़ जीवाणु उसमें डाल देते हैं। जीव-अमृत बनाने के समय हर 20 मिन्टों में, इनकी गिनती अनगिनत हो जाती है। जब हम जीव अमृत को भूमि में डाल देते हैं तो वे पेड़-पौधों की खुराक पकाने अर्थात तैयार करने में जुट जाते हैं।

भूमि में जाते ही जीव-अमृत एक और काम करता है। धरती के भीतर 10-15 फुट तक जाकर यह समाधि की स्थिति में बैठे हुए कैंचुओं तथा दूसरे जीव-जन्तुओं को ऊपर की तरफ खींच कर उन्हें कार्यशील कर देता है। वे अपनी समाधि को तोड़कर कार्य में जुट

गोबर खाद कितनी?

मैं देखता हूँ कि कई किसान पिछले कई सालों से दूसरे किसानों से या फिर शहरों से ट्रालियां खरीद कर प्रति एकड़ 15-50 बैल-गाड़ियां खाद की डालते आ रहे हैं। ऐसा केवल बड़े किसान ही कर सकते हैं। छोटा किसान गोबर खाद नहीं खरीद सकता। उसकी आर्थिक स्थिति उसे आज्ञा नहीं देती। किसानों के दिमाग में यह बात घर कर चुकी है कि यदि कुदरती खेती करनी है तो गोबर खाद ज़्यादा मात्रा में ही डालनी पड़ेगी। इसका परिणाम बिल्कुल उल्टा हुआ है। जो छोटे और मध्य वर्गीय किसान हैं, जो हर साल गोबर खाद नहीं खरीद सकते उन्होंने ज़्यादा से ज़्यादा मात्रा में रासायनिक खादें डालनी शुरू कर दीं। इस कारण भूमि बंजर बनती गई तथा पैदावार हर साल कम होने लगी। यह किसान आर्थिक संकट और कर्जे की जंजीरों में जकड़ा गया। उसके पास आत्म-हत्या के अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता बचा ही नहीं। वह या तो आत्म-हत्या करे या फिर खेती वाली भूमि बेच कर शहर में जाकर मजदूरी करे। यदि काम न मिले तो गुण्डागर्दी तथा अपराध करने का रास्ता चुने। मैंने किसानों की ऐसी स्थितियों को बदलने के

उदाहरण के तौर पर-गन्ना, केला, जीरी, गेहूँ, ज्वार, मक्की, अरहर, मूंगी, मांह, छोले, सूरजमुखी, सरसों, बाजरा, मिर्च, प्याज, हलदी, फूल-पौधे, बैंगन, टमाटर, आलू, हरी सब्जियां, गवारा, लहसुन, दवा-पौधे आदि फसलों के ऊपर छिड़काव की विधि इस तरह है। आप महीने में कम से कम एक बार या दो-तीन बार जीव-अमृत छिड़को।

1. बीज बीजने से 15 दिन बाद प्रति एकड़ में 5 लीटर बीज-अमृत कपड़े से छान कर 100 लीटर पानी डाल कर छिड़काव करना है। यह 5 प्रतिशत घोल है।
2. बीज बीजने के एक महीने बाद भी ऊपर लिखित विधि से छिड़काव करना है।
3. बीजाई से 45 दिनों के बाद 10 लीटर जीव-अमृत 150 लीटर पानी में। यह 7.5 प्रतिशत घोल है।
4. बीजाई से दो महीने बाद (60-90 दिनों के बीच) 20 लीटर जीव-अमृत 200 लीटर पानी में।
5. बीजाई से अढ़ाई महीने बाद 20 लीटर जीव-अमृत 200 लीटर पानी में। यह 10 प्रतिशत घोल है।
6. बीजाई से तीन महीने बाद 20 लीटर जीव-अमृत 200 लीटर पानी में।
7. बीजाई से साढ़े तीन महीने बाद 25 लीटर जीव-अमृत 200 लीटर पानी में।
8. बीजाई से 2 महीने बाद 25 लीटर जीव-अमृत 200 लीटर पानी में। यह 12 प्रतिशत घोल है।
9. बीजाई से 4 महीने बाद 30 लीटर जीव-अमृत 200 लीटर पानी में।
10. बीजाई से 5 महीने बाद 30 लीटर जीव-अमृत 200 लीटर मानी में। यह 15 प्रतिशत घोल है।

गन्ना, केला, पपीता के ऊपर जीव-अमृत का छिड़काव

इन फसलों के ऊपर पहले पाँच महीने ऊपर का छिड़काव करने के उपरान्त अन्तिम विधि से छिड़काव प्रत्येक 15 दिनों के बाद करते रहो।

तीन बार उबाल आने के बाद बर्तन को आग पर से उतार लो। 48 घंटे तक ठंडा होने के बाद घोल को कपड़े से छान कर किसी बर्तन में सम्भाल कर रख लें। 100 लीटर पानी में 2 से 2.5 लीटर डाल कर फसल पर छिड़काव करो।

गुड़ – जल अमृत

जरूरी सामग्री –

जैविक गुड़	3 – 5 किलो
वेसन	01 किलो
गोबर	10 किलो
सरसों का तेल	200 ग्राम
पानी	200 लीटर

विधिः सरसों के तेल में गोबर और वेसन को अच्छी प्रकार मिला लो। अब गुड़ सहित सारे सामान की 200 लीटर पानी में अच्छी प्रकार घोल कर ढांप कर छाया में रख दो। 24 घन्टे फरमेट अर्थात ख़मीरा होने दो। गुड़ – जल अमृत तैयार है।

प्रयोग में लाने का ढंगः फसल को सींचते समय इसमें पानी डाल कर छिड़काव करो।

विशेषताः यह भूमि के भीतर लाखों करोड़ों सूक्ष्म जीवाणुओं के लिए उस समय सम्पूर्ण आहार का कार्य करता है जब ज़मीन में जैविक मादे की कमी हो।

जबरैलिक

ज़रूरी सामग्री –

एक साल पुराने उपले	15 किलो
पानी	50 लीटर
पलास्टिक ड्रम	01

विधिः 15 किलो उपलों को 50 लीटर पानी में डाल कर 4 दिनों के लिए ढांप कर छाया में रख दो। जबरैलिक घोल तैयार है।

1. देसी गाय का गोवर - 5 किलो (यदि गाय का गोबर न मिले तो देसी बैल या भैंस का गोबर)
2. गौ - मूत्र - 5 लीटर (मानवी मूत्र भी ठीक है)
3. चूना या कली - 250 ग्राम
4. पानी - 20 लीटर

इन चीज़ों को पानी में घोल कर 24 घन्टे तक रखो। दिन में दो बार लकड़ी से इसे हिलाना है। उसके बाद बीजों के ऊपर बीज - अमृत डालकर उन्हें शुद्ध करना है। उसके बाद छाया में सुखा लेने हैं और फिर बीजाई कर देनी है।

बीज - अमृत से शुद्ध किए हुए बीज जल्दी और ज़्यादा मात्रा में उगते हैं। जड़ें तेजी से बढ़ती हैं। भूमि द्वारा लगने वाली बीमारियां नहीं लगती तथा पौधे अच्छी प्रकार बढ़ते - फूलते हैं। केले के कन्द और गन्ने की गांठे लगाने से पहले उनको बीज - अमृत में डूबो कर तुरन्त लगा देना चाहिए। यदि जीरी, प्याज, टमाटर, बैंगन या किसी भी पौधे की पनीरी लगानी है तो उनकी जड़ों को बीज - अमृत में डूबो कर लगा दो।

जब हम धरती में जीव - अमृत डालते हैं तो एक ग्राम जीव - अमृत में 500 करोड़ (अनगिणत) सूक्ष्म जीवाणू डालते हैं। वे जीवाणु सभी पौधों के लिए खुराक पकाने के लिए होते हैं। भूमि तो पूर्णतय पालनहार है ही, परन्तु भूमि में जो खुराक है वह पकी हुई नहीं है। पकाने का काम ये जीवाणु करते हैं। जीव - अमृत डालते ही ये हर प्रकार के खुराकी तत्व कहाँ से लेते हैं? उन्हें कैंचुए तथा दूसरे जीव - जन्तु ही खिलाते - पिलाते हैं।

ये अनगिणत जीव - जन्तु और कैंचुए तभी काम करते हैं जब उनको भूमि की ऊपर वाली सतह में 25 से 32 डिग्री सैलसीयस तापमान और 65 से 72 प्रतिशत नमी तथा भूमि के अंदर अन्धेरा और शान्त वातावरण मिले।

जब हम भूमि के ऊपर ढक्कन डाल कर भूमि को ढाँप देते हैं तो यह जरूरत अनुसार वातावरण तैयार हो जाता है।

कैन्सर नहीं होता :

कारनेल विश्वविद्यालय के पशुविज्ञान के विशेषज्ञ प्रो. रोनाल्ड गोरायटे के अनुसार गाय के दूध में एम.डी.जी.आई. प्रोटीन के कारण मनुष्य शरीर की कोशिकाएँ कैन्सर युक्त होने से बचती है।

कैन्सर मिटता है :

गाय के दूध में उसी गाय का घी मिलाकर पीने से और गाय के घी से बना हुआ गरम-गरम हलुवा खाने से कैन्सर मिटता है ।

संग्रहीणी का निदान :

खाया पीया बिल्कुल न पचता हो इक्कीस किशमिश गोमाता के दूध में ओटाएँ उसके पश्चात् किशमिश निकालकर खा लें, दूध में शहद मिलाकर पीयें, आमों का मौसम हो तो 'आमरस' पीयें, किन्तु उसमें शक्कर नहीं डाले । भोजन हल्का (तरल) करें ग्यारह दिनों में संग्रहणी मिट जायेगी ।

मलेरिया का ईलाज :

किशमिश और मुनक्का के पांच-पांच दाने गो दूध में औटाकर रोगी को सुबह-सुबह खिला पिला दें। मलेरिया पुराना हो तो 10 ग्राम सौंठ चूर्ण भी डाल दें मलेरिया भाग जायेगा।

यौवन रक्षा :

जंगल में चरने वाली गाय का दूध-घी और शहद से बुढ़ापा जंगल में भाग जाता है।

अद्‌भुत प्रयोग :

मेरे पुत्र विनय कुमार की पत्नि सौ. विनीता जब गर्भवती थी और 7 मास का गर्भ था उस वक्त बच्चे का पूर्ण विकास नहीं था । डॉक्टरों को खामगांव तथा अकोला में बताया, सबका यही कहना था कि बच्चे में कोई वृद्धि नहीं है, साधारण प्रसव नहीं होगा तथा बच्चे को इन्क्यूबेटर मशीन में रखना पड़ेगा । बचे हुए दो महीनों में हमने बहू के हाथ से गाय को गुड़ रोटी दिलाई तथा गाय की परिक्रमा नित्य करायी, जिसके परिणाम स्वरूप साधारण प्रसूति हुई । पुत्री श्रद्धा चंचल और होशियार है, 4-5 मास पहले बोलने तथा चलने लगी, बहुत ही सुन्दर तथा होनहार बच्ची है । यह गोमाता का आशीर्वाद है ।

अभिनवप्रकल्प- स्वावलम्बी कामधेनु नगर शहरों में उपनगर बसाते समय वहाँ के नागरिकों को शुद्ध हवा, पानी, अन्न, फल, सब्जी, दूध व संस्कार युक्त वायुमण्डल मिले वे बीमार ही न हों, आनन्द उत्साह का जीवन जी सकें ऐसी सुविधा उनको प्रदान की जाय इस उपनगर को बनाते समय यह भावना है। इस **उपनगर** में तीन प्रकार के आवास होंगे।

(1) 2000 वर्ग फुट क्षेत्र (2) 1500 वर्ग फुट क्षेत्र

(3) 1000 वर्ग फुट क्षेत्र - इसमें सब तरफ से हवा व प्रकाश प्राप्त होगा।

(4) इसके साथ गौशाला होगी जिससे शुद्ध, दूध, दही, छाछ (मठ्ठा), घी मिलेगा।

(5) जैविक खेती होगी- जिसमें जैविक अनाज, फल, सब्जी प्राप्त होगी।

(6) गोबर आधारित गैस प्राप्त होगी - वाहन चलाने हेतु - CNG गैस प्राप्त होगी।

(7) टहलने के लिए बड़े बाग बगीचे होंगे जहाँ शुद्ध जलवायु होगी।

(8) बालकों के लिए- आदर्श विद्यालय होगा।

(9) प्राकृतिक, आयुर्वेद, पंचगव्य, होम्योपैथी चिकित्सा की उत्तम व्यवस्था होगी।

(10) संस्कारों के लिए मन्दिर, यज्ञशाला, व्यायाम शाला व कथा प्रवचन व दृश्य श्रव्य की व्यवस्था होगी।

(11) सामाजिक, धार्मिक, विवाह आदि आयोजनों के लिए कल्याण मंडप की व्यवस्था रहेगी।

(12) पंचगव्य चिकित्सालय।

(13) छोटा औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र।

(14) कुल 5 एकड़ से 25 एकड़ भूमि की आवश्यकता।

(17) **स्वावलम्बी गोकुल गुरूकुल-** आवासीय विद्यालय, महाविद्यालय, तकनीकि व चिकित्सा महाविद्यालयों के छात्रों व कर्मचारियों अध्यापक प्राध्यापकों के लिये-गौशाला उससे दूध, दही, घी, गोबर गैस, बिजली, सब्जी, अन्न, फल, मशाले, चिकित्सा की व्यवस्था।

(18) **स्वावलम्बी सुरभी ग्राम-** हर कृषक के घर में 5-10 गाय उसके दूध का संग्रह, ऐसे हर गाँव में अनेक कृषक तैयार करना, दूध का शहरों में विक्रय गोबर गैस से भोजन, बैलों से बिजली, परिवहन पंचगव्य से चिकित्सा।

प्रत्येक ग्राम स्वावलम्बी व रोजगार युक्त, ऊर्जा युक्त बने, गाँवों से लोगों का पलायन रुके, व्यक्ति की सब आवश्यकताओं की पूर्ति गाँव में हो, व्यक्ति को शिक्षा व स्वास्थ्य की सब आधुनिकतम सुविधा प्रत्येक गाँव में उपलब्ध हों, गुरूकुल व्यवस्था को आधुनिक ढ़ंग से संवारा जाय जिसका **आधार गाय** हो। आवागमन के साधन सुखद व सुलभ हों। ग्रामों में सामाजिक स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य, समरसता, सुरक्षा, स्वावलम्बन व सम्पन्नता निर्माण करनी है, इसके लिये ग्राम विकास समितियों का निर्माण व उनका निरन्तर प्रशिक्षण।

देशी गाय, विदेशी गाय का तुलनात्मक अध्ययन

विवरण	देशी गाय	विदेशी गाय
1. विलक्षण गाय का चित्र	देशी गाय के ककूद, गलकम्बल, सींग 3 विशिष्ठ लक्षण है ।	तीनों लक्षण नहीं होते।
2. जठर (पेट)	देशी गाय के 4 जठर (पेट) होते है जो सामान्य विष का पाचन कर सकते है।	विदेशी गाय के 3 जठर (पेट) होते है।
3. गोबर	देशी गाय का गोबर बंधा हुआ छल्लेदार एवं चिपचिपा झिल्ली लिये होता है ।	इसका गोबर पतला होता है ।
4. गोबर के गुण	देशी गाय के गोबर से चर्म रोग निवारण की अद्‌भुत क्षमता होती है।	इसके गोबर से चर्म रोग बढ़ते हैं।
5. गौमूत्र	देशी गाय का गौमूत्र अमृत तुल्य सर्व रोग निवारक, सर्व विष शोषक, गंगा समान एक दिव्य तरल पदार्थ है।	इस के मूत्र में यह गुण नहीं होते हैं ।
6. स्वर्णांश	देशी गाय के ककूद में सूर्य केतु नाम की नाड़ी होती है जो सूर्य से स्वर्ण खींचकर दूध, गोबर, गोमूत्र को स्वर्ण युक्त बना देती है ।	ककूद (थूहा) नहीं होता अतः स्वर्ण का सवाल ही नहीं होता ।
7. दूध	देशी गाय का दूध पीला होता है। गुणों की खान होता है । अमृत तुल्य है ।	इस का दूध सफेद होता है। रोगों को जन्म देने वाला होता है। क्योंकि इसमें हुक वार्म होते है अतः जहर तुल्य है।
8. दही	सुपाच्य व अनेको रोगों का नाश करता है ।	इसमें वे गुण नहीं
9. तक्र (छाछ)	दही से भी ज्यादा लाभप्रद पेट के अनेक रोगों की दवा है।	इसमें भी वह क्षमता नहीं ।

विवरण	देशी गाय	विदेशी गाय
10. घी	देशी गाय का घी सुगंध युक्त, पीला सोने के समान रंगवाला जमने के बाद भी नरम होता है। हमारे शरीर के तापमान पर पिघल जाता है।	इस का घी सुंगध हीन, सफेदसा होता है। अपेक्षा कृत कड़ा होता है।
11. सुपाच्यता	देशी गाय का दूध दही, घी सुपाच्य होता है। नवजात शिशु से लेकर 100 वर्ष के बुजुर्ग व्यक्ति भी इसे आसानी से पचा सकते है।	इसका दूध, दही, घी रोग युक्त गुणहीन होने के कारण सुपाच्य नहीं है।
12. नस्यक्रिया	देशी गाय के शुद्ध घृत की नस्यक्रिया से सभी रोग नष्ट हो जाते है।	नुकसानदायी हो सकती है।
13. पोष्टिकता	देशी गाय के दूध, दही, घी में अद्भुत पोष्टिकता होती है।	इसके दूध में उतनी पोष्टिकता नहीं होती है।
14. पूर्णता	देशी गाय का दूध एक सम्पूर्ण आहार है । इसमें काबोहाइड्रेट खनीज आदि सभी आवश्यक तत्व है ।	देखने में एक जैसा होते हुए भी गुण हीन है।
15. रोग प्रतिरोधक क्षमता	देशी गाय जल्द बीमार नहीं होती । बीमार गाय जल्द स्वस्थ हो जाती है।	जल्द रोगी होती है, जल्द मर जाती है ।
16. आहार	कम खाती है ।	ज्यादा खाती है।
17. बछड़ा-बछड़ी	देशी गाय का बछड़ा जन्म लेने के साथ खड़ा हो जाता है। 1 घण्टे में दौड़ने लगता है।	विदेशी गाय का बछड़ा इतनी जल्दी अपने पाव पर खड़ा नहीं होता । न ही इतना चपल होता है।

विवरण	देशी गाय	विदेशी गाय
18. रूपा	देशी गोवंश लक्ष्मी रूप है। सभी देवी-देवताओं का वास है। प्रसन्न होने पर सब कुछ दे सकती है। आँखों में करूणा + प्यार है।	देखने में सुन्दर नहीं कुरूप है।
19. रख-रखाव	नहीं के बराबर कुछ नहीं चाहिए, छाह भी नहीं ।	बहुत ज्यादा एसी (AC) एवं कूलर चाहिए ।
20. धूप सहनशीलता	सूर्य रूपी है अतः 8/10 घण्टे धूप में सुख पूर्वक रह सकती है । कड़ी से कड़ी धूप में कष्ट नहीं होता ।	जरा भी गर्मी पड़ने पर हाँफने लगती है। ज्यादा गरमी पड़ने पर मर भी सकती है।
21. वर्तमान स्थिति	संख्या तेजी से घट रही है। कृत्रिम गर्भाधान के प्रचलन से नस्ल बिगड़ रही है।	अधिक लालच में शहर के ग्वाले यहाँ तक अनेक गोशाला वाले भी इस गाय जैसे पशु की संख्या बढ़ा रहे है।
22. रोग प्रतिकारण शक्ति, पशु चिकित्सा व टीकाकरण पर सीमित खर्च के कारण बीमारी की समस्या बहुत गंभीर नहीं होती । मृत्यु संख्या कम और बछड़े बढ़ कर उत्कृष्ट बैल बनते है।		22. पशु चिकित्सा व टीकाकरण पर खर्च अधिक और रोग के कारण मृत्युसंख्या ज्यादा जबकी बछड़ों का खेती के लिये उपयोग नहीं होता है।
23. प्रजनन क्षमता	प्रजनन से 12 से 15 बार तक क्षमता	5-6 बार तक
24. दूध क्षमता	अच्छे नन्दी जिसकी माँ अधिक दूध वाली रही हो से बीजदान करवाने, अच्छे खान-पान से इसकी भी कई नस्लें-गिर कांकरेज, राठी, थरपारकर, हरियाणा, साहीवाल, मालवी 15 से 20 लीटर दूध प्रतिदिन दे सकती है ।	

विवरण	देशी गाय	विदेशी गाय
18. रूपा	देशी गोवंश लक्ष्मी रूप है। सभी देवी-देवताओं का वास है। प्रसन्न होने पर सब कुछ दे सकती है। आँखों में करूणा + प्यार है।	देखने में सुन्दर नहीं कुरूप है।
19. रख-रखाव	नहीं के बराबर कुछ नहीं चाहिए, छाह भी नहीं ।	बहुत ज्यादा एसी **(AC)** एवं कूलर चाहिए ।
20. धूप सहनशीलता	सूर्य रूपी है अतः 8/10 घण्टे धूप में सुख पूर्वक रह सकती है । कड़ी से कड़ी धूप में कष्ट नहीं होता ।	जरा भी गर्मी पड़ने पर हाँफने लगती है। ज्यादा गरमी पड़ने पर मर भी सकती है।
21. वर्तमान स्थिति	संख्या तेजी से घट रही है। कृत्रिम गर्भाधान के प्रचलन से नस्ल बिगड़ रही है।	अधिक लालच में शहर के ग्वाले यहाँ तक अनेक गोशाला वाले भी इस गाय जैसे पशु की संख्या बढ़ा रहे है।
22. रोग प्रतिकारण शक्ति, पशु चिकित्सा व टीकाकरण पर सीमित खर्च के कारण बीमारी की समस्या बहुत गंभीर नहीं होती । मृत्यु संख्या कम और बछड़े बढ़ कर उत्कृष्ट बैल बनते है।		22. पशु चिकित्सा व टीकाकरण पर खर्च अधिक और रोग के कारण मृत्युसंख्या ज्यादा जबकी बछड़ों का खेती के लिये उपयोग नहीं होता है।
23. प्रजनन क्षमता	प्रजनन से 12 से 15 बार तक क्षमता	5-6 बार तक
24. दूध क्षमता	अच्छे नन्दी जिसकी माँ अधिक दूध वाली रही हो से बीजदान करवाने, अच्छे खान-पान से इसकी भी कई नस्ले-गिर कांकरेज, राठी, थरपारकर, हरियाणा, साहीवाल, मालवी 15 से 20 लीटर दूध प्रतिदिन दे सकती है ।	

॥ॐ॥

गौ शाला परिसर में लगाये जाने वाले बड़े पेड़

1.	नीम	22.	कचनार	43.	गुग्गल
2.	पीपल	23.	तेज पत्र	44.	पारस पीपल
3.	वट्-बरगद	24.	दाल चीनी	45.	शिवलिंगी
4.	शीशम	25.	लिसोड़ा	46.	सहजना
5.	शमी (खेजड़ी)	26.	गून्दी	47.	आम
6.	कीकर (देशी बबूल)	27.	जाल	48.	ईमली
7.	सिरस	28.	मीठा नीम	49.	खेर
8.	चरेल	29.	बकायन	50.	चीकू
9.	करंज	30.	जंगल जलेबी	51.	सुपारी
10.	बेर-पेमली बेर	31.	गूलर	52.	नारियल
11.	जामुन	32.	सागवान	53.	कटहल
12.	अर्जुन	33.	साल	54.	लीची
13.	बेल	34.	पाकुड़	55.	अमरूद
14.	आंवला	35.	बांस	56.	अनार
15.	बहेड़ा	36.	सेमल	57.	काजू
16.	अशोक	37.	सफेदा (नीलगिरि)	58.	इन्द्र रूख
17.	पारिजात	38.	ताड़	59.	खजूर
18.	रोहिड़ा	39.	बादाम	60.	अमलतास
19.	पलास (ढ़ाक)	40.	महुआ	61.	तेन्दुपत्ता
20.	धोकड़ा	41.	सफेद चंदन	62.	चीड़
21.	रीठा	42.	लाल चंदन		

गौ शाला परिसर में लगाये जाने वाले फूलदार पौधे

1.	चम्पा	7.	मधु मालती	13.	सफेद कनेर
2.	चमेली	8.	मधु कामिनी	14.	पीली कनेर
3.	गुलाब	9.	रात की रानी	15.	गुलदाऊदी
4.	कमल	10.	चांदनी	16.	जूही
5.	मोगरा	11.	गेंदा	17.	जवा कुसुम
6.	सदाबहार	12.	लाल कनेर		

गायों की खुराक-रख-रखाव

300 किलों वजन की गाय को शरीर भार का एक प्रतिशत दाना, 2 प्रतिशत चारा, 4 प्रतिशत हरा चारा, 12 प्रतिशत पानी 50 ग्राम नमक व पानी में थोड़ा कली करने वाला चूना डाल देना चाहिये जिससे कैलशियम की पूर्ति हो सके। सप्ताह में एक बार सुबह नीम खिलाना चाहिये जिससे पेट में कृमि निर्माण न हो।

- गायों को मच्छरों से व ठंड से बचाने के लिए गौशाला में एक कोने में गोबर के कण्डे जला देने चाहिये जहाँ से सारी गौशाला में धुँआ चला जाय।
- गायों को दूध निकालने से पहले चारा खिला देना चाहिए।
- दूध निकालने का समय सुबह सायं का निश्चित हो, दूध निकालने के समय मधुर वंशी की धुन लगा देनी चाहिए।
- गाय का आवास खड़ी ईंटों से बनाना चाहिये, कठोर फर्श से अयन खराब हो जाते हैं।
- दूध से हटने के बाद जो बछड़े नन्दी नहीं बन सकते उनकी नसबन्दी (बधियाकरण) करवा देनी चाहिए। बाद में बड़ा होने पर उन्हें कृषि कार्य व माल ढोने के लिये प्रशिक्षित करना चाहिए।
- दूध बढ़ाने के लिये शुरू के तीन महिनों तक दो थनों का दूध बछड़े-बछड़ी को पिलाना चाहिये, बाद में एक थन का दूध अन्त तक पिलाना चाहिए।
- छोटे बच्चे को एक माह तक रूई से 10 ग्राम नित्य तेल देना चाहिए।
- नंदी को नित्य 50 ग्राम गुड़ तेल में भिगोकर देना चाहिए। उन्हें नित्य 75 ग्राम शतावरी देनी चाहिए। गायों को नित्य 30 ग्राम शतावरी देनी चाहिए इससे 15 दिन में एक लीटर दूध बढ़ जायेगा।
- गाय पारिवारिक जीव है उसे प्यार चाहिए। उससे नित्य 10-15 मिनट बात करनी चाहिए, उस पर हाथ फेरना चाहिये।

गोपालक श्रीकृष्ण की बंसी :

गोदोहन-बेला के पूर्व प्रातःकाल बंसी ध्वनि में राग ललित, राग विभास भैरवी, आसावरी के स्वर निकालने पर अल्प समय में अतिशीघ्र दूध निकल आता है। गरुड़ पुराण में मृत्यु के बाद वैतरणी पार करने का माध्यम गाय को ही माना है।

पशु किसी कार्य को करने के लिए जितनी शक्ति का प्रयोग करता है, उसको 'भारवाहक पशु शक्ति' कहा जाता है । भारत में इस प्रकार की शक्ति की कोई कमी नहीं है । भारत में करीबन आठ करोड़ कार्य योग्य पशु हैं, यद्यपि कोई वैज्ञानिक आंकड़े उपलब्ध नहीं है, तथापि विश्वास से कहा जा सकता है कि उपलब्ध पशु धन से 3 करोड़ किलोवाट प्रतिदिन ऊर्जा प्राप्त होती है । इतनी क्षमता की ऊर्जा-शक्ति केन्द्र स्थापित करने के लिए 30 अरब रुपयों से भी अधिक लागत आयेगी ।

हमारे देश की कृषि हेतु 90% ऊर्जा आज भी गोवंश से ही मिल रही है । रेल और ट्रक से देश का केवल 30% माल ढ़ोया जाता है, परन्तु बैलगाड़ी खेत से गाँव से मंड़ी तक देश का 70% माल ढोकर विदेशी डीजल की भारी बचत कर रही है। बैल शक्ति, बैल चलित हल केवल 10 इंच जमीन में जाने के कारण जमीन की नमी, केंचुए व अन्य जीवाणुओं को सुरक्षित रख उर्वरा शक्ति कायम रखता है, जबकि ट्रेक्टर की फाल के एक डेढ़ फीट हो जाने के कारण जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हो जाती है । मंहगे ट्रेक्टर, रासानिक खाद, बीज व कीटनाशक खरीदनें में असमर्थ भारत के 73% छोटे सीमान्त किसान जमीन बेचकर मजदूर बनने या महानगरों की झुग्गी झोपड़ियों में नारकीय जीवन जीने को मजबूर हो रहे हैं।

गाय के दूध की उत्कृष्टता :

"कार्बोहाइड्रेट, वसा, अल्बुमिनाइड, क्षार तथा विटामिन होने के कारण गाय का दूध, प्रौढ़ एवं बच्चों के लिए आदर्श व सम्पूर्ण आहार है" प्रो. डॉ. एन.एन. गोडबोले । गाय के दूध के पोष्टिक तत्व प्रतिशत में- पानी 87.3%, प्रोटीन्स 4.0%, वसा 4.0%, कार्बोहाइड्रेटस 4.0%, खनिज (मिनरल्स) 0.7% ऊर्जा (कैलोरी) 6.5% ।

गो दुग्ध में केल्शियम, सोडियम, मैग्नेशियम, पोटेशियम, क्लोरीन, लोहे आदि खनिज तत्व शामिल हैं जो जीवन विकास के लिए अत्यावश्यक है । साथ ही विटामिन ए, बी, सी, डी, ई के योग्य प्रमाण में होने के कारण यह शरीर को सशक्त बनाता है । विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में होता है रसायन वैज्ञानिक गाय के दूध-घी को 'एटम-बम' के अणु-कणों के विष को शमन करने वाला मानते हैं ।

- गाय के दूध में ही Strontian तत्व है जो अणु विकिरण का प्रतिरोधक है ।
- गाय के दूध सुपाच्य और पोषक है जो कि माताओं, दुर्बल, बीमार, वृद्ध और बालकों के लिए गुणकारी है। यह शरीर की सातों धातुओं को बढ़ाता है ।
- गाय के दूध में 'सेरीब्रोसाइड, तत्व है जो दिमाग एवं बुद्धि के विकास में सहायक है व गाय का दूध शीतल है, अतः पित्त विकारों में बहुत लाभकारी है । अम्लपित्त (एसीडीटी, अल्सर, दाह) व शरीर में अधिक गरमी आदि में गाय का दूध उत्तम है ।

गो चिकित्सा

गायों की चिकित्सा देशी पद्धति से आयुर्वेद या होम्योपैथी दवा से करनी चाहिये, एलोपैथी चिकित्सा महंगी व अधूरी है । इसलिये पुराने समय में जिन वस्तुओं से चिकित्सा होती थी उन वस्तुओं को व उन चिकित्सकों को ढूढ़कर उनके ज्ञान को संग्रह कर सुरक्षित करना चाहिये ।

- पेट में कृमि
- गायों का शरीर बाहर आना
- आफरा
- जेर नहीं गिरने पर
- गर्मी में न आना
- जूं, किलनी, चींचड़
- थनैला रोग
- मुँह पका - खुर पका
- बच्चा होने में कठिनाई
- गर्भ न ठहरना

पशुओं में होने वाले रोग एवं होम्योपैथिक उपचार

क्र.	रोग	लक्षण	दवाई	मात्रा
1.	मुँहपका (छाले खुरपका)	मुँह व पैर में छाले चलने में परेशानी, खुरों में घाव	बोरेक्स 200 मर्कसॉल - 200 केलेन्डुला - 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
2.	रतौंधी	दिखने में परेशानी	यूफ्रेशिया 200 कास्टीकम-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
3.	आँखें आना	पानी आना, लाल होना जलना	यूफ्रेशिया 200 बेलाडोना 200 पल्सेटिला 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
4.	पेशाब में खून आना	पेशाब में जलन, गरम व खून आना	फेरमफास 200 हेमामेलिस 200 केन्थेरिस 200 फास्फोरस 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
5.	फूलगोभी की तरह मस्से (Wart)	शरीर पर मस्से होना	थुजा 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार

पशुओं में होने वाले रोग एवं होम्योपैथिक उपचार

क्र.	रोग	लक्षण	दवाई	मात्रा
6.	अन्य प्रकार के मस्से	शरीर पर मस्से होना बच्चे जनने के बाद	डलकामारा-200 कास्टीकम-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
7.	जड़ निकलना Prolaps and Uterus बच्चेदानी का बाहर निकलना	पेशाब की जगह से जड़ निकलना, ब्यावने पशुओं के बैठ जाने पर होता है	सिपीया 200 पोडोफाइलम 200 रूटा - 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
8.	गलघोंटू	गले में सूजन बुखार	यूपेटोरियम पर्फ 200 आयोडिनम 200 कालीबाइक्रोम 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
9.	अफारा	पेट में गैस भरना, पेट फूलना, कब्ज टट्टी कड़ी होना	कांबोंवेज 200 कोल्चीकम 200 नक्स वोमिका 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
10.	चोट, घाव इन्ज्यूरी सड़ांध	शरीर पर घाव या चोट लगना व पस बन जाना	केलेन्डुला 200 आर्निका 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
11.	डायरिया (दस्त)	पतले पिचकारी के समान दस्त	ऐलोज 200 पोडोफाइलम 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
12.	खूनी दस्त	खून व आँव मिला पतला गोबर	मर्कसाल-200 मर्ककोर-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
13.	सर्दी, खाँसी, जुकाम	नाक से पतला पानी बहना व खाँसना	एलियमसिपा-200 ब्रायोनिया-200 एन्टिमटार्ट-200 आर्स आयोड-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
14.	जलना	आग से जलने पर	केनथेरिस-200 कास्टीकम-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार

1. पंचगव्य स्नान टिकिया

उपयोगी उपकरण :→

1. वेट मशीन
2. प्लास्टिक टब
3. प्लास्टिक बाल्टी
4. मिक्सर / ग्राइंडर
5. चलनी मेश 85 नं.
6. लोहे की कढ़ाई / पतीला
7. कड़छी
8. डाई
9. चाकू

(A) साबुन पाउडर निर्माण :→

घटक द्रव्य :→
1. मुल्तानी मिट्टी = 2 KG
2. गेरू = 300 g
3. हल्दी = 50 g

निर्माण विधि :→

1. मुल्तानी मिट्टी, गेरू व हल्दी को चलनी से छानकर उसका वजन करेंगे।
2. तीनों को एक टब में डालकर अच्छी तरह मिलायेंगे। यही साबुन पाउडर है।

(B) टिकिया तेल निर्माण :→

घटक द्रव्य :→ (प्रति लीटर)
1. तिल तेल = 1 ली.
2. गोमय स्वरस = 2 ली.
3. भीमसेनी कपूर = 100 g

निर्माण विधि :-

1. कढ़ाही में तिल तेल गर्म करेंगे। (झाग आने तक)
2. गर्म होने के बाद उसमें गोमय स्वरस पतली धार बनाकर धीरे-2 डालेंगे।
3. मंद अग्नि पर तेल व गोमय स्वरस पकायें।
4. गोमय स्वरस ओटकर हरे रंग के पत्थर के समान दिखने लगता है। यह तेल हरे रंग का होने पर सिद्ध समझे। (4.)
5. तेल सिद्धी की परीक्षा कर तेल गर्म रहते ही छान ले।
6. तेल गुनगुना होने पर भीमसेनी कपूर को बारीक पीसकर मिलाये।

(C) नीम काढ़ा निर्माण :- (प्रति लीटर)

घटक द्रव्य :-

1. जल = 2 ली.
2. नीमपत्र = 200 g

निर्माण विधि :-

1. कढ़ाई में पानी व नीम के ताजे पत्ते डालकर पानी को आधा होने तक गर्म करे।
2. जब आधा रह जाये तो छानकर किसी बोतल में भर ले। नीम काढ़ा तैयार है।

(D) साबुन / टिकिया निर्माण :-

घटक द्रव्य :-

1. साबुन पाउडर = 2.340 kg.
2. टिकिया तेल = 200 ml
3. नीम काढ़ा = आवश्यकतानुसार

निर्माण विधि :-

1. सर्वप्रथम साबुन पाउडर को एक टब में लेंगे।
2. फिर इसमें टिकिया तेल डालकर मिक्स करेंगे।

2. उबटन (फेसपैक)

घटक द्रव्य :- (प्रति 730 ग्राम लगभग)

1. मुल्तानी मिट्टी = 500 g
2. गेरू = 150 g
3. शतावरी = 50 g
4. वचा = 80 g
5. कपूरकचरी = 40 g
6. हल्दी = 10 g
7. हरड़ = 50 g
8. गुलाब परफ्यूम = 20 ml

उपयोगी उपकरण :-

1. वेट मशीन 2. प्लास्टिक टब
3. चलनी मेश नं. 85 (4) मेजरिंग सिलेंडर (5) मिक्सर / ग्राइंडर

निर्माण विधि :-

1. (1) से (7) तक की वस्तुओं को चलनी से छानकर उनका वजन करके टब में अच्छी तरह मिक्स कीजिए।

2. तत्पश्चात् गुलाब परफ्यूम मिक्स करके मिक्सर में चलाये और पैक कीजिए।

पैकिंग :- 50g / 100g की पोलिथीन बैग या डिब्बी में पैक कीजिए।

उपयोग :- * कील-मुहासे दूर करने में उपयोगी।
* सभी प्रकार के त्वचा रोगों में उपयोगी।
* मुखकांतिवर्धक व झुर्रियों को न आने दें।
* व्यंगनाशक

3. अब नीम काढा आवश्यकतानुसार इतना मिलायें कि इसका लड्डू बन जाये।
4. अब लगभग 150g का लड्डू बनाकर डाई में डालकर साबुन तैयार कीजिए
5. साबुन के किनारों पर थोड़ा तेल लगाकर उसे चिकना बनायें।
6. 24 घंटे छाया में सुखाकर 4-6 दिन धूप में सुखाए और प्रतिदिन साबुन को पलटते रहिए।
7. तैयार होने पर संगजीरा पाउडर लगाकर पैक कीजिए।

पैकिंग :- प्रति साबुन पॉलिथीन बैग और बॉक्स में पैक कीजिए।

उपयोग :- * कील-मुहासे दूर करने में उपयोगी।
* सभी प्रकार के त्वचा रोगों में उपयोगी।
* मुखकांतिवर्धक व झुर्रियों को न आने दें।
* त्वकवलिनाशक (Removes wrinkles.)

3. चन्दन धूपबत्ती

घटक द्रव्य :→

1. ताजा गोमय = 500 g
2. मसीह = 200 g
3. नागरमोथा = 125 g
4. लाल चन्दन = 125 g
5. कपूरकचरी = 125 g
6. मेदा लकड़ी = 125 g
7. राल = 250 g
8. गौघृत = 100 g
9. गुड़ = 125 g
10. जल = आवश्यकतानुसार

उपयोगी उपकरण :→

1. चलनी
2. बेट मशीन
3. प्लास्टिक टब
4. इंजेक्शन 5 पीस
5. कटोरा

निर्माण विधि :→

1. सर्वप्रथम थोड़ा जल लेकर पिसा हुआ गुड़ डाले और अच्छी तरह से मिलाकर रख लीजिए।
2. (2) से (7) तक की वस्तुओं को एक टब में लेकर अच्छी तरह से मिलाये।
3. अब इसमें गोमय डालकर अच्छी तरह से मिक्स कीजिए।
4. इसके बाद इसमें घी डालकर मिक्स कीजिए।
5. अंत में गुड़ वाला जल छानकर मिक्स कीजिए और आवश्यकतानुसार जल डालकर थोड़ा गीला कर लीजिए।
6. अब इंजेक्शन की सहायता से स्टिक निकाले और 2-3 दिन तक धूप में सूखने के लिए रखे।
7. उपरांत पैकिंग कीजिए।

4. लाल दंतमंजन

घटक द्रव्य :- (प्रति 1250 ग्राम)

1. स्वर्ण गेरू = 500 g
2. त्रिफला = 125 g
3. त्रिकटु = 125 g
4. बबूल छाल = 250 g
5. मुलेठी = 125 g
6. लौंग तेल = 25 ml
7. भीमसेनी कपूर = 20 g
8. अजवायन सत = 20 g
9. पुदीना सत = 20 g
10. गौघृत = 25 g

उपयोगी उपकरण :-

1. चलनी मेश 85 एवं सामान्य
2. वेट मशीन
3. मेजरिंग सिलैण्डर
4. कलई लोटा / स्टील
5. चमचा
6. चूल्हा
7. काँच का गिलास
8. प्लास्टिक टब
9. मिक्सर / ग्राइंडर

निर्माण विधि :-

1. सर्वप्रथम गेरू को घी में थोड़ा भुनेंगे।
2. ठण्डा होने दें तब तक एक काँच के गिलास में (7),(8) व (9) को पीसकर मिक्स करेंगे और कुछ समय तक रख दें।

5. काला दंतमंजन

घटक द्रव्य :- (प्रति किलो)

1. मशीट = 750 g
2. भीमसेनी कपूर = 20 g
3. अजवायन सत् = 20 g
4. लौंग तेल = 20 g
5. नीलगिरी तेल = 20 g
6. सेंधा नमक = 120 g
7. फिटकरी भस्म = 50 g
8. जल = 220 ml

उपयोगी उपकरण :-

1. वेट मशीन
2. चलनी मेश 85/सामान्य
3. चूल्हा
4. तवा
5. चाकू
6. मिक्सर / ग्राइंडर
7. जग
8. काच का गिलास
9. चम्मच
10. प्लास्टिक टब

निर्माण विधि :-

1. सर्वप्रथम ग्राइंडर मे फिटकरी का पाउडर करके उसे धीमी आँच पर तवे पर गर्म कीजिये ।
2. फिटकरी पहले पिघलेगी, फिर कठोर (हार्ड) हो जायेगी ।
3. कठोर होने पर इसे ग्राइंडर में बारीक पीसकर मेश 85 चलनी से छान लीजिए ।
4. मशीट को भी मेश 85 से छान लीजिए ।
5. सेंधा नमक को एक जग मे पानी में मिलाकर उसका घोल तैयार कीजिए
6. कपूर व अजवायन सत् को बारीक पीसकर गिलास में उसका द्रावण तैयार कीजिए ।

6. जटामांसी पंचांग केश तेल

घटक द्रव्य :- (प्रति 2 लीटर)

1. तिल तेल = 200 ml
2. नारियल तेल = 1800 ml
3. रतनजोत = 25 g
4. जटामांसी = 25 g
5. कपूरकचरी = 25 g
6. भृंगराज = 25 g
7. त्रिफला = 75 g
8. निम्बू = 6 पीस
9. आंवला परफ्यूम = 15-20 ml
10. जल = आवश्यकतानुसार
11. गोदुग्ध = 2 ली.

उपयोगी उपकरण :-

1. वेट मशीन
2. मेजरिंग सिलेण्डर
3. लीटर जग
4. स्टील का पतीला
5. कड़छी
6. चूल्हा
7. चाकू
8. थाली

निर्माण विधि :-

1. स्टील के पतीले में तिल तेल और नारियल तेल मिलाकर धीमी आँच पर गर्म कीजिए।
2. जब तेल गर्म हो जाये तो उसमें नीबू को बीच में से काटकर डाले।
3. जब नीम्बू के चारों ओर भूरा रंग दिखने लगे, तब उसमें दूध डाले।
4. अब इसमें रतनजोत डाले और लगातार कड़छी से चलाते रहे।
5. त्रिफला व भृंगराज को दरदरा पीसकर कल्क (लड्डू) बनाकर तेल में डाले।

7. गौमूत्र एवं नीम बेस्ड फिनायल

(A) नीम-गौमूत्र काढ़ा :→

घटक द्रव्य :→

1. गौमूत्र = 1 ली.
2. नीमपत्र = 200 g

निर्माण विधि :→

1. स्टील के पतीले में गौमूत्र व नीम के ताजे पत्ते डालकर पानी को चौथाई होने तक गर्म कीजिए।
2. जब चौथाई रह जाये तो छान लीजिए, काढ़ा तैयार है।

नोट :→ गौमूत्र ताजा ही लें, ज्यादा पुराने गौमूत्र का रंग परिवर्तित हो जाता है जिससे फिनायल का रंग भी बदल जाता है।

(B.) पाइन ऑयल सोल्यूशन :→

घटक द्रव्य :→

1. पाइन ऑयल = 1 ली.
2. इमल्सिफायर = 100 ml
3. S.L.E.S. = 200 ml

निर्माण विधि :→

1. सबसे पहले किसी पात्र में पाइन ऑयल लीजिए।
2. इसके बाद धीरे-धीरे पतली धार बनाते हुए S.L.E.S. डालिये। इस बीच लगातार घुमाते रहिए।
3. अब इमल्सिफायर को भी इसी प्रकार से धीरे-धीरे धार बनाते हुए डालिए।
4. अब पाइन ऑयल सोल्यूशन तैयार है।

नोट :→ पाइन ऑयल जिस दिन बनाना है, उसी दिन उपयोग में लेना है बनाकर नहीं रखना है।

(C.) फिनायल निर्माण :-

घटक द्रव्य :- (प्रति लीटर)

1. पाइन ऑयल सोल्यूशन = 100 ml
2. डिस्टिल वाटर = 875 ml
3. नीम-गौमूत्र काढा = 25 ml

निर्माण विधि :-

1. सबसे पहले एक पात्र में पाइन ऑयल सोल्यूशन लीजिए।
2. इसके बाद डिस्टिल वाटर लिजिए (डालिए) और साथ में हिलाते रहे।
3. अंत में नीम-गौमूत्र काढा डालिए।
4. अब इसे पेपर से छानिए। (प्रिंटिंग प्रेस वालो के पास)
5. अब फिनायल तैयार है।

पैकिंग :- 500 ml / 1000 ml की प्लास्टिक बोतल में पैक कीजिए।

प्रयोग :- 10 ली. पानी में 25 ml फिनायल डालकर प्रयोग करें।

उपयोग :-
* कीटाणुनाशक
* जीवाणुनाशक
* पर्यावरण अनुकूल
* किसी प्रकार का एसिड नहीं।

उपयोगी उपकरण :-

1. स्टील का पतीला
2. कढ़ी
3. प्लास्टिक का डिब्बा (2 ली.) = 2 No.
4. मेजरिंग सिलेंडर / जग
5. हैंडी
6. पेपर छानने हेतु
7. पॉवर प्वाइंट

8. गोरज तिलक

घटक द्रव्य :-

1. रोली (कुमकुम) = 1 kg
2. गोरज = 100 g
3. हल्दी = 100 g
4. गुलाब खुशबू = 20 ml

उपयोगी उपकरण :-

1. वेट मशीन
2. मेजरिंग सिलेंडर
3. चलनी
4. प्लास्टिक टब
5. मिक्सर

निर्माण विधि :-

1. गौमाता के बाड़े से धूलि लेकर, छानकर टब में डाले
2. उसके बाद रोली एवं हल्दी को भी उसमें मिलाये।
3. अब इसमें गुलाब खुशबु डालकर पैक कीजिए।

पैकिंग :- 20g की पॉलिथीन बैग या डिब्बी में पैक कीजिए।

उपयोग :-

* इसका मस्तक पर नियमित तिलक करने से मानसिक शांति, आकर्षण एवं सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होती है
* नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करता है।

गो दुग्ध

सर्वरोग नाशक :

गाय की रीढ़ में 'सूर्य केतु' नामक नाड़ी होती है जो सूर्य के प्रकाश में जागृत होती है, इसलिये गाय सूर्य के प्रकाश में रहना पसन्द करती है, भैंस छाया में रहती है । सूर्य केतु नाड़ी जागृत होने पर स्वर्ण रंग का वह पदार्थ छोड़ती है, इसी कारण गाय के दूध का रंग पीला होता है और घी स्वर्ण के रंग का होता है जो सर्व रोगनाशक और विष विनाशक होता है । गाय के दूध में स्वर्ण तत्व पाये जाते हैं यह तत्व माँ के दूध के अतिरिक्त दुनियाँ में किसी भी पदार्थ में नहीं मिलते हैं ।

नशे से मुक्ति :

गाय के दूध में अद्‌भुत औषधीय गुण है । गाय के दूध से बनी छाछ किसी भी प्रकार के नशे जैसे गांजा, चिलम, तम्बाकू, शराब, हेराइन, स्मेक इत्यादि से होने वाले प्रभाव को कम ही नहीं करती, अपितु नियमित सेवन से नशे की इच्छा भी धीरे-धीरे कम होती जाती है ।

टी.बी. मिटता है :

गाय को शतावरी खिलाकर दूध प्राप्त कर उसका उपयोग करने पर टी.बी. रोग मिटता है।

मलेरिया के विरूद्ध रामबाण :

यदि 400 ग्राम दूध को उबाला जाय और आकड़े (आक) पौधे की अंगूठे जितनी मोटी हिलाने योग्य हरी लकड़ी से दूध को हिलाया जाता रहे तो कुछ समय में दूध फट जायेगा । उस फटे हुए दूध को इतने समय तक हिलावै कि पानी का सम्पूर्ण अंश समाप्त हो जावे और खोवा (मावा) तैयार हो जाये, तब उसमें शक्कर उचित मात्रा में मिलाकर, खाने योग्य ठंडाकर रोगी को बुखार उतर जाने पर खिलाएँ मलेरिया से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जावेगा ।

कोलेस्टरोल नहीं बढ़ता :

गाय के दूध से कोलेस्टरोल नहीं बढ़ता बल्कि हृदय एवं रक्त धमनियों के संकोचन का निवारण होता है ।

- महर्षि वशिष्ठ की कामधेनू -

एक बार क्षत्रिय राजा विश्वामित्र अपनी सारी सेना के साथ वशिष्ठजी के आश्रम से गुजरे। उनके साथ पूरी चतुरङिणी सेना थी, जिसमें लाखों सैनिक थे। महर्षि वशिष्ठ के पास शबला कामधेनु गौ थी,उसने सभी लोगों के लिये स्वादिष्ट भोजन उत्पन्न कर दिया, जिसे ग्रहणकर सेनासहित विश्वामित्र तृप्त हो गये और सोचने लगे कि महर्षि वशिष्ठ ने ऐसा सामर्थ्य कहां से प्राप्त कर लिया क्योंकि उनके पास कोई अन्य साधन तो दिखता नहीं है। जब उन्हें पता लगा कि यह सब शबला कामधेनु गाय का ही दिव्य विलक्षण प्रभाव है, तो उन्होंने उसे वशिष्ठजी से शबला कामधेनु को मांग लिया।

राजा विश्वामित्र ने कहा कि मैं इसके बदले आपको पर्याप्त धन दूंगा। परन्तु महर्षि वशिष्ठ तैयार नहीं हुए। तब राजा ने उस शबला को जबर्दस्ती घसीटकर ले जाने के लिए अपने सिपाहियों को आज्ञा दी। वे लोग उसे घसीटने लगे, तब 'शबला' ने रोते हुए महर्षि वशिष्ठ से कहा कि आप मुझे इसको क्यों दे रहे हो?

इस पर वशिष्ठजी ने कहा- 'मैं तुम्हें नहीं दे रहा हूँ। यह राजा बलवान है। मेरी बात नहीं मान रहा हैं और तुम्हें बल पूर्वक ले जाना चाहता है। तुम्हारी जो इच्छा हो वो करो, मैं तुम्हें जाने को नहीं कहता। इस पर शबला ने अपने शरीर से अनन्त संख्या में सैनिकों को उत्पन्न किया, जिन्होंने महर्षि विश्वामित्र की सेना को नष्ट कर दिया। इसका वर्णन महर्षि वाल्मीकि ने अपनी रामायण में बड़े रमणीय और आकर्षक शब्दों में किया है।

गोमय साबुन (स्नान के लिए)

शास्त्रों में गोबर की बड़ी महिमा है, स्नान के लिए लिखा है-''यन्मे रोगं, शोकचं - तन्मे वहुत गोमय'' अर्थात् गोबर से किया स्नान संस्कारित होता है, जिससे सर्व शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों का वहन होता हैं। ऋषियों ने गोमय (गोबर), मिट्टी (मृतिका एवं भस्म), स्नान का विधान किया हैं। श्रीमद्भागवत के 10-6-20 में पूतना का भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा रक्तपान के बाद गोपियों द्वारा गोमूत्र से स्नान कराने, गोरज लगाने तथा समस्त शरीर पर गोबर लेप करने का उल्लेख जाता हैं।

<u>सामग्री-</u> गोबर (देशी गाय का ताजा)- 1250 ग्राम, मुल्तानी मिट्टी-1000 ग्राम, अजवाइन सत्त-10 ग्राम, कपूर डली वाला-50 ग्राम, गोबर का रस निकालकर बराबर-बराबर तिल्ली के तेल में पकाकर बनाया हुआ तेल-250 ग्राम।

<u>बनाने की विधि:-</u> उपरोक्त गीले-ताजे गोबर, गेरू, मुल्तानी मिट्टी को खूब पीसकर, मिलाकर दो दिन धूप में सुखाएँ, फिर बारीक चूर्ण करके कपड़े अथवा बारीक छलनी में छानें। कपूर की डली तथा अजवाइन सत को खूब मसलें। फिर नीम के पत्तों का पानी के साथ उबाल कर काढ़ा बनाएँ, छान लें तथा गरम काढ़ा इसमें आवश्यक अनुपात में मिलाकर, डाई या साँचे में दबाकर टिकिया बनाकर धूप में सुखाकर उपयोग में लें।

गोवंश रक्षा हेतु हम सामान्य जन क्या कर सकते है?
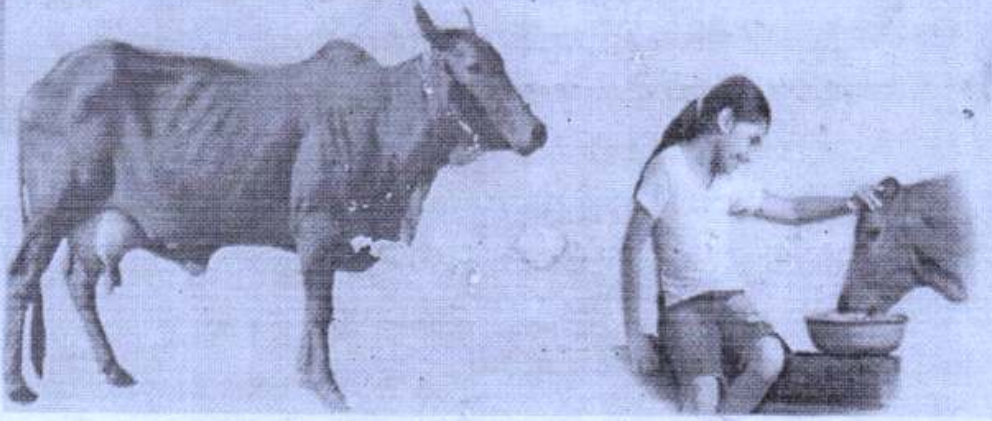
- घर में कम से कम एक गाय को पालें। संभव न हो तो गोशाला की कम से कम एक गाय के पालनपोषण का खर्च वहन करें।
- पंचगव्य निर्मित स्वास्थ्यवर्धक व लाभप्रद मंजन, साबुन, उबटन, धूप, मच्छर निरोधक अगरबत्ती जैसे उत्पादों का ही उपयोग करें।
- घर में गाय के ही दूध, दही, तक्र, घृत का उपयोग करें।
- बीमारीयों मे सस्ती, सुलभ हानिरहित पंचगव्य औषधियों का ही उपयोग करें।
- समय समय पर मित्र-परीवार सहित गोशाला में भेंट दें तथा गोरक्षा हेतु होनेवाले आंदोलनो में सक्रिय सहयोग दें।
- लाखों गोवंश के मृत्यु का कारण बनी प्लास्टिक थैलियाँ का उपयोग न करें।
- चांदी के वर्क लगी मिठाइयों का विरोध करें।
- गोवंश हत्या से प्रेरित हिंसक उत्पादों को स्वयं जान ले तथा इस विषय में जनजागरण करें। जैसे - चमडे से बने जूते-चप्पल, चांदी वर्क, कोट, पर्स, सूटकेस, बिस्तरबंद, बेल्ट, गलीचा, फर्नीचर कवर, ढोलक, वाद्ययंत्र, क्रिकेट बॉल, फुटबॉल, कलात्मक मूर्तियाँ, टोपी, हाथपोस, बेबीसूट, गोमाँस व चरबी से बने नकली घी, बेकरी उत्पाद, आईस्क्रीम, चॉकलेट, टूथपेस्ट व पावडर, कुछ साबुन, कोल्डक्रीम, वैनीशिंग क्रीम, लिपस्टिक, परफ्यूम, नेलपॉलिश, डाई, लोशन, शॅम्पू, सिंथेटिक दूध, खिलौने आदि।
- गोहत्या से प्रेरित कुछ औषधियाँ जैसे इन्सुलिन, डेक्सोरेंज सीरप, कई कॅलशियम पूरक औषधियाँ का विरोध करें। औषधियों के साहित्य में Bovine लिखा होना याने औषधियों में गोवंश के माँस का उपयोग है ऐसा समझना चाहिए।
- आजकल पनीर में गाय के बछड़े से प्राप्त रेनेट का उपयोग होता है। ऐसे पनीर का विरोध करें।
- जैविक कृषि से प्राप्त खाद्यान्न का ही उपयोग करें।
- विपत्ति में पड़े और कत्तलखानों में जा रहे गोवंश को छुडाने में पहयोग करें।